भाग 6 वैशिकं

अध्याय 1 सहायगम्यागम्यगमन कारणचिन्ता प्रकरण

श्लोक-1. वेश्यानां पुरूषाधिगमे रतिर्वृत्तिश्च सर्गात्।।1।।

अर्थःवेश्याओं में धन के प्रति आकर्षण तथा संभोग की प्रकृति जन्मजात होती है।

श्लोक-2. रतितः प्रवर्तनं स्वाभाविकं कृत्रिममर्थार्थम्।।2।।

अर्थःवेश्याओं का धन के प्रति आकर्षण कृत्रिम होता है और सेक्स की प्रवृत्ति स्वाभाविक होती है।

श्लोक-3. तदपि स्वाभाविकवद्रूपयेत्।।3।।

अर्थःवेश्या जहां पर बनावटी प्रेम दिखाती हैं, वह स्वाभाविक ही प्रतीत होता है।

श्लोक-4. कामपरासु हि पुंसां विश्वासयोगात्।।4।।

अर्थःसेक्स करने की इच्छा जिस स्त्री में होती है, आमतौर पर पुरूष उसी स्त्री के प्रति अधिक आकर्षित होते हैं।

श्लोक-5. अलुब्धतां च ख्यापयेत्तस्य निदर्शनार्थम्।।5।।

अर्थःवेश्याएं पुरूष को आकर्षित करने के लिए निर्लोभी बनने का दिखावा करती हैं।

श्लोक-6. न चानुपायेनार्थान् साधयेदायतिसंरक्षणार्थम्।।6।।

अर्थःअपना प्रभाव बनाये रखने के लिए वेश्याओं को अधिक से अधिक धन कमाने के लिए प्रयास करना चाहिए।

श्लोक-7. नित्यमलंकारयोगिनी राजमार्गावलोकिनी दृश्यमाना न चातिविवृता तिष्ठेत्। पण्यसधर्मत्वात्।।7।।

अर्थःवेश्या स्त्री हर समय श्रृंगार किये रहे तथा सड़क पर आने-जाने वाले लोगों को देखती रहे। उसे ऐसी जगह पर बैठना चाहिए कि लोग आसानी से देख सके, लेकिन उसे बिल्कुल निर्वस्त्र होकर नहीं बैठना चाहिए क्योंकि वेश्यावृत्ति भी बाजार में बिकने वाली वस्तुओं के समान है।

श्लोक-8.यैर्नायकमावर्जयेदन्याभ्याश्चावच्छिन्द्यादात्मनश्चानर्थं प्रतिकुर्यादर्थं च साधयेत्र च गम्यैः परिभूयेत तान् सहायान् कुर्यात्।।8।।

अर्थःवेश्या को उसी व्यक्ति को अपनी सहायता करने वाला बनाना चाहिए, जो उसके प्रेमी को उसकी ओर आकर्षित कर सके तथा उस पर आये हुए संकट को दूर कर सके। यदि वेश्या के साथ सेक्स करने वाला व्यक्ति उसका शोषण करना चाहे तो सहायता करने वाला व्यक्ति उसकी मदद कर सके जिससे उसका शोषण न हो।

श्लोक-9. ते त्वारक्षकपुरूषा धर्माधिकरणस्था दैवज्ञा विक्रान्ताः शूराः समानविद्याः कलाग्राहिणः पीठमर्दविटविदूषकमालाकारगान्धिक-शौण्डिकरजकनापितभिक्षकास्ते च ते च कार्ययोगात्।।9।।

अर्थःशासनाधिकारी, वकील, ज्योतिषी, साहसी, मालाकार, गन्धी, शराब के विक्रेता, नाई, धोबी, भिखारी और अन्य ऐसे ही लोग वेश्या के मददगार हो सकते हैं।

श्लोक-10. गम्यचिन्तामाह- केवलार्थास्त्वमी गम्याः- स्वतंत्रः पूर्वे वयसि वर्तमानों वित्तवानपरोक्षवृत्तिरधिकरणवानकृच्छ्राधिगतवित्तः। संघर्षवान् सन्ततायः सुभगमानि श्लाघनकः पण्डकश्च पुंशब्दार्थी। समानस्पर्धी स्वभावतस्तागी। राजनि महामात्रे वा सिद्धो दैवप्रमाणो वित्तावमानी गुरुणां शासनातिगः सजाताम् लक्ष्यभूतः सवित्त एक पुत्रो लिंगी प्रच्छन्नकामः शूरो वैद्यश्चेति।।10।।

अर्थःअधिकतर वेश्याएं उन्हीं लोगों से लेन-देन करती हैं, जो सामाजिक पारिवारिक बन्धनों से मुक्त स्वतंत्र होते हैं। एक बंधी हुई आमदनी वाले वरुण होते हैं और जो व्यक्ति अधिक धन खर्च करते हैं, जिनके पास पैतृक संपत्ति हो जो स्वयं न कमाकर दूसरों की कमाई खर्च करते हो। इसी तरह जिस व्यक्ति को अपने रूप, यौवन तथा धन पर गर्व हो, जो नपुंसक होकर भी अपने को अधिक सेक्स क्षमता से युक्त मानता हो, जिसकी धन देने की स्वाभाविक प्रवृत्ति हो, राजा और मंत्री पर जिसका प्रभाव हो, ज्योतिषी, आवारा माता-पिता का जो इकलौता संतान हो। संयासी जो वेश्या से संबंध बनाकर छिपाना चाहता हो और शारीरिक रूप से शक्तिशाली व्यक्तियों से वेश्याएं धन प्राप्त करने के लिए संबंध बनाती हैं।

श्लोक-11. प्रीतियशोऽर्थास्तु गुणतोऽधिगम्याः।।11।।

Free Hindi PDF Books

अर्थःजो वेश्याएं विशुद्ध प्रेम तथा यश की ख्वाहिश रखती हैं, वे वेश्याएं गुणी कलाकार व्यक्तियों से ही संबंध बनाने को महत्व देती हैं।

श्लोक-12. महाकुलीनो विद्वान्सर्वसमयज्ञः कविराख्यानकुशलो वाग्मी प्रगल्भो विविधशिल्पज्ञो वृद्धदर्शी स्थूललक्षो महोत्साहो दृढभक्तिरनसूयकस्त्यागी मित्रवत्सलो घटागोष्ठीप्रेक्षकसमाजसमस्या क्रीडनशीलो नीरुजोऽव्यंगशरीरः प्राणवानमद्यपो वृषो मैत्रः स्त्रीणां प्रणेता लालयिता च। न चासां वशगः स्वतंत्रवृत्तिरनिष्ठुरोऽनीर्ष्यालुरनवशंकी चेति नायक-गुणाः।।12।।

अर्थःवेश्याएं जिन गुणों के अनुसार लोगों की तरफ आकर्षित होती हैं वे गुण हैं- अधिक विद्वान होना, संकेतों को समझना, कवि, कहानीकार, बात करने में चतुर, हस्तशिल्प का विशेषज्ञ, विनम्र, ऊंचे विचारों वाला, उत्साही सम्पन्नता, दृढ़ प्रतिज्ञ, दूसरों की निंदा न करने वाला, त्यागी, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ, इकहरा बदन, नशीली वस्तुओं से नफरत करने वाला, प्रचंड वेग, दयावान, स्त्रियों के सदाचार के समर्थक तथा पालक स्त्रियों के वशीभूत न होना, स्वतंत्र वृत्ति, ईर्ष्यारहित तथा निर्भयता आदि।

श्लोक-13. नायिकायाः पुना रूपयौवनलक्षणमाधुर्ययोगिनी गुणेष्वनुरक्ता न तथार्थेषु प्रीतिसंयोगशीला स्थिरमतिरेकजातीया विशेषार्थिनी नित्यमकदर्यवृत्तिगोष्ठीकलाप्रिया चेति नायिकागुणाः।।13।।

अर्थः इस श्लोक के अंतर्गत सुंदर लड़कियों के बारे में जानकारी दी गयी है जो निम्न हैं- सुंदर चेहरा, प्रिय, रूप, यौवन, माधुर्यसंपन्नता, प्रेमी के गुणों पर मोहित होना न कि धन पर, सेक्स की इच्छा करने वाली, स्थिर बुद्धि, गुणों पर आकर्षित होने वाली, पतिव्रता और विभिन्न सम्मेलनों तथा कलाओं से प्यार करने वाली हो।

श्लोक-14. नायिका पुनर्बुद्धिशीलाचार आर्जवं कृतज्ञता दीर्घदूरदर्शित्वं अविसंवादिता देशकालज्ञता नागरकता दैन्यातिहासपैशुन्यपरिवादक्रोधलोभ स्तम्भ चापल वर्जनं पूर्वाभिभाषिता कामसूत्र कौशलं तदंगविद्यासु चेति साधारणगुणाः।।14।।

अर्थः इस श्लोक के अंतर्गत प्रेमी तथा प्रेमिका दोनों के सामान्य गुणों के बारे में जानकारी दी गयी है जो निम्न हैं- बुद्धिशीलता, आचरण, विनम्रता, कृतज्ञता, दूरदर्शिता, वाद-विवाद से दूर रहना, सही समय और सही जगह को पहचानना, शिष्टाचार गुणयुक्त तथा याचना, निष्प्रयोजन हास्य, चुगलखोरी, निन्दा, क्रोध, लालच, अभिमान तथा चंचलता आदि बुराइयों से दूर रहना और

जब तक कोई कुछ न पूछे तब तक चुप रहना, कामशास्त्र के कौशलों और कामसूत्र की अंगभूत विद्याओं के बारे पूरी जानकारी होना। ये सभी गुण प्रेमी और प्रेमिकाओं के हैं।

श्लोक-15. गुणाविपर्यये दोषाः।।15।।

अर्थः उपर्युक्त गुणों से रहित होने पर वही प्रेमी और प्रेमिका के दोष हो जाते हैं।

श्लोक-16. क्षयी रोगी कृमिशकृद्वायसास्यः प्रियकलत्रः परुषवाक्कदर्यो निर्घृणो गुरुजनपरित्यक्तः स्तेनो दम्भशीलो मूलकर्मणि प्रसक्तो मानापमानयोरनपेक्षी द्वेष्यैरप्यर्थहार्यो निर्लज्ज इत्यगम्याः।।16।।

अर्थःटी.बी. के रोगी, कुष्ठ रोगी, पेट के कीड़े का रोगी जिसके मुख से बदबू आती हो, पत्नीवृत्त, कड़वे वचन बोलने वाला, दुराचारी, निर्दयी, माता-पिता के द्वारा घर से निकाले हुए, चोर, दम्भी (कपटी), जादूगर, मान-अपमान की परवाह न करने वाला, लालच में दुश्मनों से मिल जाने वाला तथा शर्म-संकोच न करने वाला आदि गुणों वाले लोगों से वेश्या को सेक्स संबंध नहीं बनाने चाहिए।

श्लोक-17. रागो भयमर्थः संघर्षो वैरनिर्यातनं जिज्ञासा पक्षः खेदो धर्मोयशोऽनुकंपा सुहृद्वाक्यं हीः प्रियसादृश्यं धन्यता रागापनयः साजात्यं साहवेश्यं सातत्यमायतिश्च गमनकारणानि भवन्तीत्याचार्याः।।17।।

अर्थःभय, प्रेम, अर्थ, लड़ाई-झगड़ा तथा बदले की भावना, पक्षपात, दुःख, धर्म, प्रसिद्ध, अनुकम्पा, शर्म-संकोच, प्रेमी के अनुरूप होना, धनी, निस्तेज रहित, सजातीयता, साथ रहना तथा प्रभाव-आदि सभी गुण समागम के कारण होते हैं।

श्लोक-18. अर्थोऽनर्थप्रतीघातः प्रीतिश्चेति वात्स्यायनः।।18।।

अर्थःआचार्य वात्स्यायन के अनुसार- धर्म तथा अनर्थ की हानि व प्रेम ही समागम के कारण होते हैं।

श्लोक-19. अर्थस्तु प्रीत्या न बाधितः। अस्य प्राधान्यात्।।19।।

अर्थःजहां पर प्रेम तथा धन दोनों हों वहां प्रेम को छोड़कर धन के बारे में सोचना चाहिए।

श्लोक-20. भयादिषु तु गुरुलाघवं परीतक्ष्यमिति सहागम्यागम्य (गमन) कारणचिन्ता।।20।।

Free Hindi PDF Books

अर्थःडर आदि के जो गमन के कारण पहले सूत्र के अंतर्गत बताएं गये हैं, उसमें से गुरुता (महत्व) तथा लाघव (निरादर) परीक्षा कर लेनी चाहिए। सहाय, गम्य, अगम्य तथा गमन के कारणों पर विचार पर समाप्त हुआ।

श्लोक-21. उपमन्त्रितापि गम्येन सहसा न प्रतिजानित्। पुरूषाणां सुलभावमानित्वात्।।21।।

अर्थः सेक्स करने की इच्छा के वशीभूत होकर पुरूष यदि सेक्स करने के लिए बुलाए तो ऐसी स्थिति में वेश्या को तुरन्त ही सेक्स करने के लिए नहीं जाना चाहिए क्योंकि पुरुषों की आदत होती है कि जो वस्तु उन्हें आसानी से प्राप्त हो जाती है उसकी ओर उनका ध्यान नहीं जाता है और जो वस्तु दुर्लभ होती है, उसे वे प्राप्त करने की कोशिश करते हैं।

श्लोक-22. भावजिज्ञासार्थ परिचारकमुखान्समवाहकगायन वैहासिकान्गम्ये तद्रक्तान्वा प्रणिदध्यात्।।22।।

अर्थःवेश्या को यदि अपने प्रेमी के भावों की परीक्षा करनी हो तो वेश्या को अपने पैर दबाने के लिए नौकर, गाना सुनने के लिए गायक तथा विदूषक आदि प्रमुख सेवकों की नियुक्ति करनी चाहिए।

श्लोक-23. तदभावे पीठमर्दादीन्। तेभ्यो नायकस्य शोचाशौचं रागापरागौ सक्तासक्तातां दानादाने च विद्यात्।।23।।

अर्थःयदि उपर्युक्त विश्वस्त सेवक किसी कारणवश न मिल पायें तो उसके अभाव में वेश्या पीठमर्द (वेश्या का सहायक) की नियुक्ति करे, उसके द्वारा अपने प्रति प्रेमी की सोच, राग-विराग, शक्ति और कमजोरी, दान-कंजूसी आदि बातों की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

श्लोक-24. संभावितेन च सह विटपुरोगां योजयेत्।।24।।

अर्थःजिसमें अपनी चाहत की बातों की संभावना हो, उसके साथ विटं (विदूषक) को नियुक्त कर देना चाहिए।

श्लोक-25. लावककुक्कुटमेषयुद्धशुकशारिकाप्रलापनप्रेक्षणककलाव्यपदेशेन पीठमर्दो नायकं तस्यां उदवसितमानयेत्।।25।।

अर्थःवेश्या के द्वारा नियुक्त किये गये पीठमर्द (वेश्या का सहायक) को चाहिए कि वह लवा, मुर्गा, मेढा की लड़ाई दिखाने के बहाने या तोता-मैना की बातें सुनने के लिए, कोई खेल-तमाशा

आदि देखने के लिए और नृत्य-संगीत आदि देखने के बहाने वेश्या के प्रेमी को उसके घर लाये।

श्लोक-26. तां वा तस्य्।।26।।

अर्थःअथवा वेश्या को ही उसके प्रेमी के घर पर ले जाना चाहिए।

श्लोक-27. आगतस्य प्रीतिकौतुकजननं किंचिद्द्रव्यजातं स्वयमिदमसाधारणो-प्रभोग्यमिति प्रीतिदायं दद्यात्।।27।।

अर्थःयदि पुरूष वेश्या के घर आये तो उसे वेश्या को ऐसी वस्तुएं देनी चाहिए जो देखने में आश्चर्यजनक और उत्सुकता बढ़ाने वाली हों।

श्लोक-28. यत्र च रमते तया गोष्ठयैनमुपचारैश्च रञ्जयेत्।।28।।

अर्थःऔर जिस स्थान पर पुरूष का मन बहलता हो उसी स्थान पर वेश्या उचित साधनों, उपायों द्वारा उसका मनोरंजन करें।

श्लोक-29. गते च न सपरिहासप्रलापां सोपायनां परिचारिकामभीक्ष्णं प्रेषयेत्।।29।।

अर्थःवेश्या के घर से जब उसका प्रेमी चला जाए तो वह वेश्या मुस्कराकर बोलने वाली दासी के हाथ कुछ प्रेमोपहार देकर नायक के पास भेजे। इस प्रकार उपहार भेजते रहने का क्रम तब तक जारी रखना चाहिए जब तक कि प्रेमी उसके घर न आ जाए।

श्लोक-30. सपीठमर्दायाश्च कारणापदेशेन स्वयं गमनमिति गम्योपावर्तनम्।।3।।

अर्थःयदि आवश्यकता हो तो वेश्या को पीठमर्द (वेश्या का सहायक) के साथ स्वयं ही प्रेमी के घर पर जाना चाहिए। वेश्या के द्वारा प्रेमी को अपनी ओर झुकाने का प्रकरण यही समाप्त होता है।

श्लोक-31. भवन्ति चात्र श्लोकाः- ताम्बूलानि स्त्रजश्चैव संस्कृतं चानुलेपनम्। आगस्तस्याहरेत्प्रीत्या कलागोष्ठीश्च योजयोत्।।31।।

अर्थःइसके संबंध में प्राचीन श्लोक है- सुसंस्कृत पान, सुसंस्कृत माला, सुसंस्कृत चंदन, सुसंस्कृत परफ्यूम आदि आये हुए प्रेमी को प्रेमपूर्वक देना चाहिए तथा कला और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन करें।

श्लोक-32. द्रव्याणि प्रणये दद्यात्कुर्याच्च परिवर्तनम् संप्रयोगस्य चाकूतं निजेनैव प्रयोजयेत्।।32।।

अर्थःप्यार को बढ़ाने के लिए धन का आदान-प्रदान करें तथा सेक्स के गुप्त संकेतों को वेश्या स्वयं ही प्रकट करे।

श्लोक-33. प्रीतिदायैरुपन्यासैरुपचारैश्च केवलैः। गम्येन सह संसृष्टा रञ्जयेत्तं ततःपरम्।।33।।

अर्थःवेश्या को प्रेम-उपहार से पीठमर्द (वेश्या का सहायक) आदि की बातों को आराम से सुनकर तथा प्रेमसूचक भावों से प्रेमी को भाव-विभोर करके ही उसके साथ सेक्स करना चाहिए।

इससे पहले के प्रकरणों में पत्नी, पराई स्त्री तथा पुनर्भू- इन तीनों की तरह ही प्रेमिकाओं के साथ सेक्स करने के बारे में जानकारी दी गयी है। इसके अंतर्गत वेश्याओं के साथ सेक्स करने के उपाय विस्तार से दिये जा रहे हैं।

आचार्य वात्स्यान ने स्पष्ट किया है कि जब किसी पुरूष पर वेश्याएं प्रेम प्रकट करती हैं तो उनके उस प्रेम में धन का लालच छिपा हुआ होता है। वेश्याएं धन के लालच में आकर पुरूष को अपने हाव-भाव से इतना अधिक सम्मोहित कर लेती हैं कि वह समझ नहीं पाता है कि उसका उस पर जो प्रेम है वह कोरा और बनावटी है। जब किसी पुरूष को वेश्या अपने जाल में फंसाना चाहती है तो सबसे पहले वह अपने दलालों से सहायता मांगती है। वेश्या के ये सहायक दलाल वेश्या के गुणों की तारीफ करके पुरुषों को आकर्षित करने की कोशिश करते हैं।

वात्स्यायन के अनुसार वेश्या को ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए जो रोगी होते हैं क्योंकि रोगी का शरीर सेक्स करने लायक नहीं होता है। इसके अलावा वेश्या को उन लोगों से दूर रहना चाहिए जोकि पत्नीवृत होते हैं। इसका कारण यह है कि ऐसा व्यक्ति दूसरी स्त्रियों की तुलना मां-बहनों से करता है। यदि वेश्या उसे फंसाने की कोशिश करती है तो यह धर्म के विरुद्ध होता है। इसके साथ ही जो कटुभाषी, निर्दयी, अपने नौकरों को दुःखी करके धन एकत्र करता हो अथवा तांत्रिक हो। ऐसे लोगों से भी वेश्या को दूर रहना चाहिए क्योंकि ऐसे लोगों पर वेश्या का कोई भी चक्कर नहीं चल सकता है। ऐसे लोगों से वेश्या को धन की उम्मीद भी नहीं रखनी चाहिए।

सेक्स की तीव्र इच्छा को ही मुख्य वासना माना गया है। वात्स्यायन के अनुसार अर्थ, अनर्थ की हानि तथा प्रेम यही तीन कारण होते हैं जिनके वशीभूत होकर पुरूष वेश्याओं के पास जाता है। कुछ आचार्यों के अनुसार वासनाएं अनेक हैं तथा वे मन की ऐसी रीतियां हैं

Free Hindi PDF Books

जो जानवरों तथा व्यक्तियों में एक तरह से प्रकट होती हैं। जिसका प्रतिवेदन सभी प्राणी अनजाने में ही करते रहते हैं।

वात्यस्यान की दूसरी बात यह है कि वेश्याएं धन के लालच से पुरुषों को सेक्स के लिए आकर्षित करती हैं। वासनाएं अलग-अलग प्रकार की होती हैं और प्रत्येक वासना का अध्ययन भी अलग-अलग दृष्टिकोण से किया जाता है, क्योंकि सभी वासना में कुछ विशेष अंश पाये जाते हैं। वासना की मूल प्रवृत्ति की अवस्थाएं होती हैं- 1. वेग 2. उद्देश्य 3. विषय 4. आश्रय स्थान। सभी वासनाओं का सार ही वेग कहलाता है। इस वेग की तीव्रता तथा कोमलता की पहचान सावधानी से करनी चाहिए।

जिस वस्तु के द्वारा वासना अपनी तृप्ति पूरी करती है। उसे विषय कहते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि वासना अपनी तृप्ति के रास्ते को छोड़कर अन्य विषयों को भी ग्रहण कर लेती है, लेकिन जिस संबंध को बनाने से तृप्ति मिलती है। उसे वासना विषय कहा जाता है। वेश्याएं सज-संवरकर जब शीशे के सामने खड़ी होकर अपने जिस अंग को विशेष रुचि तथा सर्तकता के देखती और संवारती हैं। वही अंग उनकी वासना का विषय होता है।

इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे वैशिके षष्ठेऽधिकरणे सहायगम्यागम्यचिंता गमनकारणं गम्योपावर्तनं नाम प्रथमोऽध्याय।

भाग 6 वैशिकं

अध्याय 2 कान्तानुवुत प्रकरण

श्लोक-1. संयुक्ता नायकेन तद्रञ्जनार्थमेकचारिणीवृत्तमनुतिष्ठेत्।।1।।

अर्थःवेश्या जब भी किसी पुरूष के साथ सेक्स संबंध बनाये तो वेश्या को उसी पुरूष की पत्नी बनकर रहना चाहिए।

श्लोक-2. रञ्जयेन्न तु सञ्जेज सक्तवच्च विचेष्टेतेति संक्षेपोक्तिः।।12।।

अर्थःवेश्या का संक्षिप्त चरित्र यह है कि उसे अपने प्रेमी पर मोहित न होकर उसे आसक्त के समान व्यवहार करना चाहिए।

श्लोक-3. मातरि च क्रूरशीलायामर्थपरायां चायत्ता स्यात्।।3।।

अर्थःअधिक लोभी तथा क्रूर आचरण वाली मां के अधीन वेश्या को रहना चाहिए।

श्लोक-4. तदभावे मातृकायाम्।।4।।

अर्थः यदि वेश्या की सगी मां न हो तो जिसे उसने अपनी मां मान रखा है उसके अधीन ही उसे रहना चाहिए।

श्लोक-5. सा तु गम्येन नातिप्रीयेत।।5।।

अर्थःचाहे वेश्या की सगी मां हो अथवा मानी गयी मां हो- दोनों वेश्यापुत्री पर मोहित व्यक्ति के साथ अधिक प्रेम प्रदर्शित नहीं करती हैं क्योंकि अधिक प्रेम प्रदर्शित से नुकसान भी हो सकता है।

श्लोक-6. प्रसह्य च दुहितरमानयेत्।।6।।

अर्थःमां को चाहिए कि मिलने वाले के साथ अपनी पुत्री को अधिक देर तक न बैठने दे।

श्लोक-7. तत्र तु नायिकायाः संततमरतिर्निर्वेदो व्रीडा भयं च।।7।।

अर्थःयदि वेश्या की मां उपरोक्त व्यवहार करे तो वेश्या को अपने प्रेमी के सामने जाने में अरुचि, डर तथा शर्म प्रदर्शित करना चाहिए।

श्लोक-8. न त्वेव शासनातिवृत्तिः।।8।।

अर्थःवेश्यापुत्री को अरुचि, डर तथा संकोच को प्रदर्शित करते हुए भी मां के आदेश का पालन करना चाहिए।

श्लोक-9. व्याधिं चैकमनिमित्तमजुगुप्सितमतचक्षुर्ग्राममनित्यं च ख्यापयेत्।।9।।

अर्थःवेश्यापुत्री को जब प्रेमी के पास से उठकर जाना हो तो उसे चाहिए कि वह कोई ऐसी बीमारी का बहाना बनाये जोकि निन्दित न हो तथा अचानक हो जाने वाली और अधिक दिनों तक लगातार न रहने वाली हो।

श्लोक-10. सति कारणे तदपदेशं च नायकानभिगनम्।।10।।

अर्थःजिस समय प्रेमी आया हो तथा उसके मिलने का कारण भी मौजूद हो फिर भी यदि वेश्या उससे न मिलना चाहे तो उसे कोई न कोई बहाना कर देना चाहिए।

श्लोक-11. सति कारणे तदपदेशं च नायकानभिगनम्।।10।।

अर्थःवेश्यापुत्री को अपने प्रेमी से न मिलने का दूसरा बहाना यह है कि प्रेमी के आ जाने पर वेश्या को उसके पास स्वयं न जाकर नौकरानी से पान, इलायची आदि भेज देना चाहिए।

श्लोक-12. व्यवाये तदुपचारेषु विस्मयः।।12।।

अर्थःसेक्स के समय में प्रेमी जो भी चीज वेश्या को खाने के लिए दे। तो वेश्या को उसे लेकर खा लेना चाहिए, फिर कहना चाहिए कि इससे अच्छी चीज उसने कभी भी नहीं खायी थी।

श्लोक-13. चतुःषष्टयां शिष्यत्वम्।।13।।

अर्थःवेश्या को सेक्स करने के समय सेक्स कलाओं से अंजान बनकर रहना चाहिए। इसके साथ ही उसे प्रेमी से कहना चाहिए कि मुझे सेक्स के बारे में कुछ भी नहीं मालूम है जैसा आप कहेंगे, मैं वैसा ही करुंगी।

श्लोक-14. चतुःषष्टयां शिष्यत्वम्।।14।।

अर्थःवेश्या को सेक्स के दौरान प्रेमी के द्वारा बताये गये आसनों का ही प्रयोग करना चाहिए।

श्लोक-15. तत्सात्म्यद्रहसि वृत्तिः।।15।।

अर्थःअकेले में प्रेमी के अनुकूल ही व्यवहार करना चाहिए।

श्लोक-16. मनोरथानामाख्यानम्।।16।।

अर्थःवेश्या को अकेले में अपने प्रेमी से यह भी कह देना चाहिए कि मेरी तो इच्छा है कि आप रात भर मेरे साथ सेक्स करते रहें।

श्लोक-17. गुह्यानां वैकृतवृच्छादनम्।।17।।

अर्थःवेश्या के प्रजनन अंगों में यदि किसी भी प्रकार का विकार हो तो उसे छिपाकर रखना चाहिए।

श्लोक-18. शयने परावृत्तस्यानुपेक्षणम्।।18।।

अर्थःवेश्या से मिलने आया हुआ प्रेमी जिस करवट की ओर सो रहा हो, उसके मुंह की तरफ अपना मुंह करके वेश्या को लेटना चाहिए। जिससे आसक्ति प्रकट हो सके।

श्लोक-19. आनुलोम्यं गुह्यस्पर्शने।।19।।

अर्थःयदि प्रेमी सेक्स के समय गुप्तांगों को स्पर्श करे तो वेश्या को उसका विरोध नहीं करना चाहिए। बल्कि उसे उत्साहित करना चाहिए।

श्लोक-20. सुप्तस्य चुम्बनमालिंगनं च ।।20।।

अर्थःवेश्या को चाहिए कि वह सोये हुए प्रेमी का चुंबन और आलिंगन करे।

श्लोक-21. प्रेक्षणमन्यमनस्कस्य। राजमार्गे च प्रासादस्थायास्तत्र विदिताया व्रीडा शाठयनाशः।।21।।

अर्थःवेश्या को चाहिए कि वह अपने प्रेमी को जाते हुए देखे। जब वह अधिक दूर तक चला जाए तो उसे छत पर जाकर देखे। यदि प्रेमी की नजर उस पर पड़ जाए तो उसे शर्म से नजरें झुका लेनी चाहिए। यदि वह शर्माती है तो इससे बनावटी प्रेम प्रकट होगा।

श्लोक-22. तद्द्वेष्ये द्वेष्यता। तत्प्रिये। तद्रम्ये रतिः। तमनु हर्षशोकौ। स्त्रीषु जिज्ञासा। कोपश्चादीर्घः।।22।।

अर्थःअपने प्रेमी के दुश्मनों से दुश्मनी रखें। उसके प्रेमी से प्रेम से करें, जब उसकी सेक्स की इच्छा हो तो सेक्स करें। जब वह प्रसन्न हो तो प्रसन्न हो जाएं और जब वह दुखी हो तो

उसे भी दुःखी हो जाना चाहिए। स्त्रियों के बारे में जानने की कोशिश करें तथा गुस्सा करे तो थोड़ी देर तक हो।

श्लोक-23. स्वकृतेष्वपि नखदर्शनचिन्हेष्वन्याशंका।।23।।

अर्थःप्रेमी के अंगों पर स्वयं अपने दांतों तथा नाखूनों से काटकर निशान बना दें और दूसरे दिन किसी और के निशान होने की शंका करें।

श्लोक-24. अनुरागस्यावचनम्।।24।।

अर्थःवेश्या को अपने मुंह से अनुराग प्रकट नहीं करना चाहिए।

श्लोक-25. आकारतस्तु दर्शयेत्।।25।।

अर्थःभाव-भंगिमाओं से अनुराग व्यक्त करें।

श्लोक-26. मदस्वप्नव्याधिषु तु निर्वाचनम्।।26।।

अर्थःप्रेमी के आने पर उसे सोने का अथवा बेहोशी का बहाना करके यह प्रकट करने की कोशिश करनी चाहिए कि तुम्हारे न मिलने से हमारी यह स्थिति हुई है।

श्लोक-27. श्लाघ्यानां नायककर्मणां च।।27।।

अर्थःइसी प्रकार के बहानों से प्रेमी के अच्छे कार्यों को भी कहे।

श्लोक-28. तस्मिन्ब्रुवाणे वाक्यार्थग्रहणम्। तदवधार्य प्रशंसाविषये भाषणम्। तद्ववधार्य प्रसंसाविषये भाषणम्। तद्वाक्यस्य चोत्तरेण योजनम्। भक्तिमांश्चेत्।।28।।

अर्थःवेश्या को अपने प्रेमी की बातों का अर्थ समझना चाहिए तथा उसका निश्चय करके उसकी प्रसंसा करें। प्रसंगात विषयों पर बहस करें। उसकी बात का जवाब उस स्थिति में दें कि जब कि जान जाये कि यह स्नेहशील है।

श्लोक-29. कथास्वनुवृत्तिरन्यत्र सपत्न्याः।।29।।

अर्थःकेवल सौतनों की ही बात छोड़कर प्रेमी की हर बात पर हां पर हां करनी चाहिए।

श्लोक-30. निःश्वासे जृम्भिते स्खलिते पतिते वा तस्य चार्तिमाशंसीत्।।30।।

अर्थःप्रेमी के उसांसे भरने पर, पैसा-रुपया भूल जाने पर या कहीं पर भी गिरने पर दुःख प्रकट करना चाहिए।

श्लोक-31. क्षुतव्याहृतविस्मितेषु जीवेत्युदाहरणम्।।31।।

अर्थःप्रेमी के छींकने पर, कोई आश्चर्यजनक बात कहने पर तथा आश्चर्य प्रकट करने पर जीते रहो कहना चाहिए।

श्लोक-32. दौर्मस्ये व्याधिदौर्हृदापदेशः।।32।।

अर्थःप्रेमी के मन को दुःखी देखकर उसके दुःख का कारण पूछना चाहिए। जब प्रेमी कुछ बताये तो उससे तुरंत ही कहे कि यह बीमारी तो मुझे बहुत दिनों से है।

श्लोक-33. गुणतः परस्याकीर्तनम्।।33।।

अर्थःप्रेमी के सामने किसी भी दूसरे व्यक्तियों के गुणों की तारीफ न करें।

श्लोक-34. न निंदा समानदोषस्य।।34।।

अर्थःऔर जिसमें प्रेमी के समान दोष हो उसकी निंदा भी नहीं करनी चाहिए।

श्लोक-35. दतस्य धारणम्।।35।।

अर्थःयदि प्रेमी ने वेश्या को कोई चीज उपहार में दी है तो उसके द्वारा उपहार दी गयी चीज का उपयोग वेश्या को उसके सामने ही करना चाहिए।

श्लोक-36. वृथापराधे तद्यसने वालंकारस्याग्रहणमभोजनं च।।36।।

अर्थःप्रेमी के द्वारा झूठा इल्जाम लगाने पर या प्रेमी पर किसी भी प्रकार की कोई मुसीबत आ जाने पर उसे भोजन तथा श्रृंगार का त्याग कर देना चाहिए।

श्लोक-37. तद्युक्ताश्च विलापाः।।37।।

अर्थःउसे जोर-जोर से विलाप करके रोना चाहिए।

श्लोक-38. तेन सह देशमोक्षं रोचयेद्राजनि निष्क्रियं च।।38।।

अर्थःप्रेमी से कहना चाहिए कि मुझे अपने साथ लेकर दूसरे देश चलो, राज्य शासन को जुर्माना देकर मुझे रख लो अथवा चुपचाप भगा ले चलो।

श्लोक-39. सामर्थ्यमायुषस्तदवाप्तौ।।39।।

अर्थःउसे प्रेमी से यह कहना चाहिए कि तुम्हारे मिलने से ही मेरा जीवन सफल हो गया।

श्लोक-40. तस्यार्थागमेऽभिप्रेतसिद्धौ शरीरोपचये वा पूर्वसंभाषित इष्टदेवतोपहारः।।40।।

अर्थःप्रेमी को धन की प्राप्ति होने पर, इच्छित वस्तु की प्राप्ति होने पर और शारीरिक रोग के नष्ट हो जाने पर देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करनी चाहिए।

श्लोक-41. नित्यमलंकारयोगः। परिमितोऽभ्यवहारः।।41।।

अर्थःवेश्या को हमेशा साज-श्रृंगार किये रहना चाहिए तथा संतुलित भोजन करना चाहिए।

श्लोक-42. गीते च नामगोत्रयोर्ग्रहणम्। ग्लान्यामुरसि ललाटे च करं कुर्वीत्। तत्सुखमुपलम्य निद्रालाभः।।42।।

अर्थःएकचारिणी वेश्या जब भी गाना गाये तो गाने में प्रेमी का नाम तथा गोत्र रखना चाहिए। यदि तबियत खराब हो तो प्रेमी के हाथों को अपने माथे तथा दिल पर रख ले। उसके हाथ के स्पर्श के बहाने सो जाया करे।

श्लोक-43. उत्संगे चास्योपवेशनं स्वपनं च। गमनं वियोगे।।43।।

अर्थःवेश्या को प्रेमी की गोद पर बैठ जाना चाहिए और कभी-कभी सो भी जाना चाहिए, यदि कहीं एक साथ जा रहे हो तो उसे प्रेमी के पीछे-पीछे चलना चाहिए।

श्लोक-44. तस्मात्पुत्रार्थिनी स्यात्। आयुषो नाधिक्यमिच्छेत्।।44।।

अर्थःउसे अपने प्रेमी से पुत्र लाभ की इच्छा करे तथा उससे पहले मर जाने की इच्छा करें।

श्लोक-45. एतस्याविज्ञातमर्थ रहसि न ब्रूयात्।।45।।

अर्थःप्रेमी को जिस धन के बारे में जानकारी हो उसका रहस्य अकेले में नहीं बताना चाहिए।

श्लोक-46. व्रतमुपवासं चास्य निर्वतेयेत् मयि दोष इति। अशक्ये स्वयमपि तद्रूपा स्यात्।।46।।

अर्थःइसका दोषी मुझे माना जाएगा यह कहकर उसे उपवास करने की सलाह दें। यदि वह न माने तो उसके साथ स्वयं भी उपवास करें।

श्लोक-47. विवादे तेनाप्यशक्यमित्यर्थनिर्देशः।।47।।

अर्थःकिसी दूसरे के साथ झगड़ा होने पर उसे यह कहना चाहिए कि इसे तो उसका प्रेमी ही पूरा कर सकता है।

श्लोक-48. तदीयमात्यमीयं वा स्वयमविशेषेण पश्येत्।।48।।

अर्थःअपने प्रेमी की धन संपत्ति को अपने धन के समान ही समझना चाहिए।

श्लोक-49. तेन विना गोष्ठयादीनामगमनमिति।।49।।

अर्थःकिसी भी गोष्ठी (कार्यक्रम, सम्मेलन) में जाना हो तो प्रेमी के साथ ही जाएं।

श्लोक-50. निर्माल्यधारणे श्लाघा उच्छिष्टभोजने च।।50।।

अर्थःउसे प्रेमी की उतारी गयी वस्तुओं को पहनने तथा उसका झूठा खाना खाने में अपना गौरव महसूस करना चाहिए।

श्लोक-51. कुलशीलशिल्पजातिविद्यावर्णवित्तदेशमित्रगुणवयोमाधुर्यपूजा।।51।।

अर्थःअपने प्रेमी के वंश, शील, शिल्प, जाति, विद्या, रंग, रूप, धन, निवास स्थान, मित्र, गुरू, अवस्था तथा मधुरता की प्रशंसा करनी चाहिए।

श्लोक-52. गीतादिषु चोदनमभिज्ञस्य।।52।।

अर्थःयदि प्रेमी को गाना गाना आता हो तो उसे गाना सुनाने के लिए कहना चाहिए।

श्लोक-53. भयशीतोष्णवर्षाण्यनपेक्ष्य तदभिगमनम्।।53।।

अर्थःप्रेमी के यहां अभिसार (मिलन) के लिए जाना हो तो गर्मी, जाड़ा तथा वर्षा की परवाह नहीं करनी चाहिए।

श्लोक-54. स एवं च मे स्यादित्यौर्ध्वदेहिकेषु वचनम्।।54।।

अर्थःउसे प्रेमी से यह कहना चाहिए कि अगले जन्म में भी मुझे तुम पति के रूप में मिलो।

श्लोक-55. तद्विष्टरसभावशीलानुवर्तनम्।।55।।

अर्थःप्रेमी को जो रस, भाव तथा शील रुचिकारी हो, उसी का उसे अनुसरण करना चाहिए।

श्लोक-56. मूलकर्माभिशंका।।56।।

Free Hindi PDF Books

अर्थःप्रेमी के ऊपर जादू-टोने का शक करें।

श्लोक-57. तदभिगमने च जनन्या सह नित्यो विवादः।।57।।

अर्थःप्रेमी से मिलने के लिए मां से रोजाना झगड़ा करना चाहिए।

श्लोक-58. बलात्कारेण च यद्यन्यत्र तथा नीयेत तदा विषमनशमनं शस्त्रं रज्जुमिति कामयेत्।।58।।

अर्थःयदि मां जबर्दस्ती किसी से सेक्स करने के लिए कहे तो उसे कहना चाहिए कि मैं जहर खा लूंगी, फांसी लगा लूंगी या चाकू मार लूंगी।

श्लोक-59. प्रत्यायनं च प्रणिधिभिर्नायकस्य। स्वयं वात्मनो वृत्तिग्रहणम्।।59।।

अर्थःएकचारिणी वेश्या के बारे में यदि प्रेमी को पता चल जाए कि वह दूसरे लोगों से भी संबंध बनाती है तो वेश्या को उसे यह बता देना चाहिए कि यह कार्य वह अपनी मां के कारण करती है। यदि उनके समझाने पर उसे यकीन न हो तो स्वयं उसके सामने वेश्यावृत्ति की निंदा करनी चाहिए।

श्लोक-60. न त्वेवार्थेषु विवादः।।60।।

अर्थःविशेष प्रेमी को छोड़कर अन्य दूसरे से सहवास कराने में मां से भले ही विवाद हो, लेकिन उससे धन के बारे में कभी-भी बहस न करें। मां उसे जिस किसी के पास भी सेक्स करने के लिए भेजे। उसे वहां जा करके उस व्यक्ति को खुश करके अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

श्लोक-61. मात्रा विना किंचित्र चेष्टेत।।61।।

अर्थःवेश्या को अपनी मां से आज्ञा लिए बगैर कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए।

श्लोक-62. प्रवासे शीघ्रागमनाय शापदानम्।।62।।

अर्थःएकचारिणी वेश्या का प्रेमी यदि किसी कारणवश दूसरे प्रदेश जाने लगे तो वेश्या को उससे कहना चाहिए कि- तुम्हे मेरी सौगंध, तुम शीघ्र ही घर लौटकर आना।

श्लोक-63. प्रोषिते मृजानियमश्चालंकारस्य प्रतिषेधः। मंगलं त्वपेक्ष्यम्। धारयेत्।।63।।

अर्थः प्रेमी के परदेश जाने के बाद प्रेमिका को साबुन, तेल आदि चीजों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। अन्य आभूषणों को धारण नहीं करना चाहिए। केवल मांगलिक निशान शंख की चूड़ियां न उतारे।

श्लोक-64. स्मरणमतीतानाम्। गमनमीक्षणिकोपश्रुतीनाम्। नक्षत्रचंद्रसूर्यताराभ्यः स्पृहणम्।।64

अर्थःप्रेमी को गुजरी बातों को याद करके शीघ्र ही वापस लौट आने के लिए सगुन घर वाली स्त्रियों के पास जाना चाहिए। रात का सगुन देखे तथा रात को चांद-तारों की रोशनी से ईर्ष्या प्रकट करें।

श्लोक-65. इष्ट स्वप्रदर्शने तत्संगो ममास्त्विवति वच।।65।।

अर्थःखूबसूरत सपनों को देखकर प्रेमी से समागम हो- इस प्रकार की बातें करें।

श्लोक-66. उद्वेगोऽनिष्टे शान्तिकर्म च।।66।।

अर्थःबुरे सपनों को देखने पर अनिष्ट की शांति कराएं।

श्लोक-67. प्रत्यागते कामपूजा।।67।।

अर्थःप्रेमी के सकुशल लौट आने पर प्रेमिका को कामदेव की पूजा करनी चाहिए।

श्लोक-68. देवतोपहाराणां करणम्।।68।।

अर्थः प्रेमी के सकुशल लौटने के बाद प्रेमिका ने जिन-जिन देवताओं से मान्यता मांगी हो उन्हें जाकर भेंट आदि चढ़ाना चाहिए।

श्लोक-69. सखीभिः पूर्णपात्रस्याहरणम्।।69।।

अर्थः इष्टकामना रखकर स्वजनों से पूर्णपात्र (उत्तरीय) सखियों के साथ झपटकर ले ले।

श्लोक-70. वायसपूजा च।।70।।

अर्थः काक बलि प्रदान करे।

श्लोक-71. प्रथमसमागमानन्तरं चैतदेव वायसपूजावर्जम्।।71।।

अर्थःकौवे की बलि को छोड़कर बाकी सभी काम जैसे पूजा, देवताओं को भेंट चढ़ाना आदि कार्यों को प्रवास से लौटे हुए प्रेमी से संभोग करने के बाद ही करें।

श्लोक-72. सक्तस्य चानुमरणं ब्रूयात्।।72।।

अर्थःप्रेमी के साथ सती हो जाने की बात कहा करे।

श्लोक-73. निसृष्टभावः समानवृत्तिः प्रयोजनकारी निराशंकों निरपेक्षोऽर्थेष्विति सक्तलक्षणानि।।73।।

अर्थःआसक्त प्रेमी वही होता है जो प्रेमिका पर पूरा विश्वास रखे। उसके समान अपना आचरण बना लें। प्रेमिका के कहने के साथ ही उसके कार्य कर दें, उसके प्रति संदेहशील न हो तथा धन की परवाह नहीं करनी चाहिए।

श्लोक-74. तदेतन्निदर्शनार्थ दत्तकशासनादुक्तम्। अनुक्तं च लोकलः शीलयेत्पुरुषप्रकृतितश्च।।74।।

अर्थःआचार्य दत्तक के द्वारा लिखे गये शास्त्र को देखकर संक्षेप में यह वेश्यावृत्त लिखा गया है जो बात यहां नहीं कही गयी है, उसे पराई औरतों, वेश्याओं की आराधना करने में कुशल लोगों के आचरणों को देखकर ही समझ लेना चाहिए।

श्लोक-75. भवतश्चात्र श्लोकों- सूक्ष्मत्वाददतिलोभाच्च प्रकृत्याज्ञानतस्तथा। कामलतक्ष्म तु दुर्ज्ञानं स्त्रीणां तद्भावितैरपि।।75।।

अर्थःइस विषय के दो श्लोक हैं- वेश्याओं को समझ पाना बहुत ही कठिन होता है। इसलिए कि मन में क्या चल रहा है, इसे हम अपनी इन्द्रियों से नहीं देख सकते हैं। क्योंकि वेश्याओं में धन की लालच अधिक होती है। इसके अलावा उसके पास आने वाले व्यक्ति भी कम बुद्धि वाले होते हैं।

श्लोक-76. कामयंते विरज्यन्ते त्यजन्ति च। कर्षयन्त्योऽपि सर्वार्थाञ्ज्ञायन्ते नैव योषितः।।76।।

अर्थःअपने प्रेमी को वेश्याएं प्रेम करती हैं। उन्हें अधिक प्रेम करती है तथा त्याग भी देती हैं। वे अपने प्रेमियों से धन ऐंठ लेती हैं और उन्हें महसूस भी नहीं होता है।

वेश्या अपने प्रेमी से किस प्रकार का व्यवहार करें। उस प्रेम के बंधन को किस प्रकार मजबूत बनाये। इसके बारे में प्रथम प्रकरण में उल्लेख किया गया है। इसके अंतर्गत यह बताया गया है कि प्रेमिका को अपने प्रेमी के साथ किस प्रकार का आचरण करना चाहिए। आचार्य वात्यास्यन वेश्या को उसका खोया हुआ गौरव वापस दिलाने के लिए सबसे पहले उसे एकचारिणी स्त्री बनने की सलाह देते हैं। यानी जो वेश्या नाचने-गाने के कार्य करती है उसे किसी एक आदमी की बनकर रहना चाहिए।

यदि वेश्या अपना धंधा छोड़ देती है तो उसके प्रेमी का विश्वास उस पर हो जाता है। इसके

Free Hindi PDF Books

अलावा आचार्य वात्स्यायन वेश्या को सावधान करते हुए कहते हैं कि जिस तरह पत्नी एकचारिणी होकर अपने पति को अपना सब कुछ न्यौछावर कर देती है। वैसा आचरण वेश्या के लिए उचित नहीं होता है क्योंकि वेश्या एक पेशेवर औरत होती है तथा दूसरों को अपनी तरफ आकर्षित करके उनसे पैसा कमाना ही उसके प्रेम का लक्ष्य होता है। इसलिए वेश्या को सिर्फ प्रेम का प्रदर्शन करना चाहिए। उसे केवल अपना तन सौंपना चाहिए मन नहीं। अन्यथा उसका धंधा धीरे-धीरे करके नष्ट हो जायेगा।

सभी कामशास्त्रियों का मत है कि यौन आवेग की किसी अभिव्यक्ति की जब अधिक प्रशंसा की जाती है तो वही प्रेम कहलाता है। पूरे शरीर में यौन विकरण होने से प्रेम का विकास होता है। जब प्रेम अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाता है तो वह भावावेग बन जाता है। भारतीय कामशास्त्रियों ने प्रेम का विश्लेषण नौ उपादानों द्वारा किया है। इसी प्रणाली पर यूरोपीय वैज्ञानिक हरबर्ट स्पेन्सर ने अपनी पुस्तक "मनोविज्ञान के सिद्धांत" पर विवेचन किया है। काम का शारीरिक आवेश, सौन्दर्य, लगाव, प्रशंसा, भाव, वाहवाही की इच्छा, आत्म-मर्यादा, सपत्निक भावना तथा सहानुभूतियों को उभारना- यही प्रेम के नौ उपादान हैं। वात्स्यायन ने वेश्यावृत्ति को इन्हीं उपादानों के माध्यम से विस्तृत बनाया है।

इति श्रीवात्स्यायनाये कामसूत्रे वैशिके पष्ठेऽधिकरणे कान्तानुवृत्तं द्वितीयोऽध्यायः।।

भाग 6 वैशिकं

अध्याय 3 अर्थागमोपाय प्रकरण

श्लोक-1. सक्ताद्वित्तादानं स्वाभाविकमुपायतश्च।।1।।

अर्थःजो व्यक्ति वेश्या के प्रति आकर्षित होते हैं। वेश्या उनसे दो तरीके से धन प्राप्त कर सकती है। पहला तो स्वाभाविक ढंग से और दूसरा कोशिश करने पर।

श्लोक-2. तत्र स्वाभाविकं संकल्पात्समधिकं वा लभमाना नोपायान् प्रयुज्जीतेत्याचार्याः।।2।।

अर्थःआचार्यों का कहना है कि यदि वेश्या को अपने से मिलने वाले से जितना धन चाहिए होता है उतना अगर उसे आसानी से मिल जाता है तो वेश्या को अधिक धन ऐंठने के उपाय नहीं करने चाहिए।

श्लोक-3. विदितमप्युपायैः परिष्कृतं द्विगुणं दास्यतीति वात्स्यायनः।।3।।

अर्थःआचार्य वात्स्यायन कहते हैं कि यदि वेश्या अपने ग्राहक से तय हुए धन से अधिक धन लेना चाहती है तो उसे इसके लिए उपाय करना चाहिए जिससे वह दोगुने पैसे तक प्राप्त कर लेती है।

श्लोक-4. अलंकार भक्ष्यभोज्यपेयमाल्यवस्त्रगंधद्रव्यानिदीनां व्यवहारिक कालिकमुद्धारार्थमर्थप्रतिनयनेन।।4।।

अर्थःअलंकार भक्ष्य (लड्डू, जलेबी आदि), भोज्य (अन्न आदि), पेय (शराब, जूत आदि), वस्त्र (रेशमी, ऊनी, सूती आदि), गंध (कुंकुम आदि) फूलों के हार, पान, सुपारी आदि चीजें जब वेश्या किसी निश्चित समय पर पैसे देने के वायदे पर खरीदे या चीजों के बदले में गहने आदि अमानत में रख दिये हों तो निश्चित समय पर दाम चुकता करने या दाम देकर गहने छुड़ाने के बहाने वह प्रेमी या मिलने वालों से रुपया ले ले, लेकिन केवल अमानत पर रखे हुए गहने छुड़ाने के लिए रुपये न ले।

श्लोक-5. तत्समक्षं तद्वित्तप्रशंसा।।5।।

अर्थः प्रेमी अथवा मिलने वाले के सामने वेश्या को उसके धन-दौलत की प्रसंसा करनी चाहिए।

श्लोक-6. वृतवृक्षारामदेवकुलतडागोद्यानोत्सवप्रीतिदायव्यपदेशः।।6।।

अर्थःउपवास के बहाने, पूजा और आराधना की चीजें खरीदने के लिए, बाग-बगीचा लगाने के बहाने, मंदिर आदि की स्थापना कराने के बहाने, कुंआ-तालाब बनवाने, उत्सव के बहाने तथा अपने किसी प्रेमी या मेहमान को उपहार देने के बहाने वेश्या अपने मिलने वालों से रुपया प्राप्त कर सकती है।

श्लोक-7. तदभिगमननिमित्तो रक्षिभिश्चौरैर्वालंकारपरिमोषः।।7।।

अर्थःया फिर वेश्या को प्रेमी से यह बहाना करना चाहिए कि वह आपसे मिलने जा रही है और रास्ते में पुलिस या चोरों ने गहने छीन लिए।

श्लोक-8. दाहात्कुडय्च्छेदात्प्रमादाभ्द्रवने चार्थनाशः।।8।।

अर्थःया फिर घर में आग लग जाने पर, नकब हो जाने से असावधानी के कारण धन समाप्त हो जाने का बहाना प्रेमी से करना चाहिए।

श्लोक-9. तथा याचितालंकाराणां नायकालंकाराणां च तदभिगमनार्थस्य व्ययस्य प्रणिधिभिर्निवेदनम्।।9।।

अर्थःमांगे गये गहनों और प्रेमी के द्वारा दिये गये गहनों को इस तरीके से नष्ट हुआ बताने से प्रेमी अपने दिये हुए गहनों को मांगता नहीं है। इसके बाद वेश्या को अपने विश्वास के नौकरों से प्रेमी के पास के संदेश भेजकर उससे जो मिलने के समय खर्च हुआ हो उसे भी मांग लेना चाहिए।

श्लोक-10. तदर्थमृणग्रहणम्। जनन्या सह तदुद्भवस्य व्ययस्य विवादः।।10।।

अर्थःवेश्या को प्रेमी का स्वागत सत्कार कर्ज लेकर करना चाहिए। फिर उस कर्ज के विषय में मां से झगड़ा करें।

श्लोक-11. सुहृत्कार्येष्वनभिगमनभिहारहेतोः।।11।।

अर्थःप्रेमी के दोस्त के यहां किसी उत्सव के होने पर प्रेमी जब वेश्या से भी वहां भी चलने के लिए बोले तो उसे यह कहकर मना कर देना चाहिए कि वहां जाकर उपहार देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है।

श्लोक-12. तैश्च पूर्वमाहृता गुरवोऽभिहाराः पूर्वमुपनीताः पूर्वं श्राविताः स्यूः।।12।।

अर्थःजब प्रेमी दोस्त के जलसे में उपहार देने के लिए राजी हो जाए तो उपहार ले आने से पहले उसे यह सुनाकर कहे कि तुम्हारे यहां उन्होंने कीमती उपहार दिये हैं और तुमने रख लिए हैं।

श्लोक-13. उचितानां क्रियाणां विच्छित्तिः।।13।।

अर्थःवेश्या को अपने शरीर का दैनिक श्रृंगार इसलिए बंद कर देना चाहिए ताकि प्रेमी को यह महसूस हो कि पैसों की कमी के कारण उसकी यह हालत हुई है। इससे प्रेमी उसे श्रृंगार करने के लिए पैसे देगा।

श्लोक-14. नायकार्थ च शिल्पिषु कार्यम्।।14।।

अर्थःवेश्या को शिल्पियों से ऐसी वस्तुओं को बनवा लेना चाहिए कि जिससे कि प्रेमी को पैसे खर्च करने पड़ जाएं।

श्लोक-15. वैद्यमहामात्रयोरुपकारक्रिया कार्यहेतोः।।15।।

अर्थःवेश्या राजपुरुषों तथा वैद्यों को अपने कार्यों से इस प्रकार से प्रसन्न कर दे कि वह उसके मनचाहे प्रेमी से मिलने या फिर प्रेमी को उस पर खर्च करने में उसे उसकी सहायता कर सके।

श्लोक-16. मित्राणां चोपकारिणां व्यसनेष्वभ्युपपत्तिः।।

अर्थःप्रेमी के दोस्तों और उसका उपकार करने वालों पर यदि किसी प्रकार की मुसीबत आ जाए तो वेश्या को उनकी सहायता करनी चाहिए।

श्लोक-17. गृहकर्म संख्याः पुत्रस्योत्सञ्जनम् दोहदो व्याधिर्मित्रस्य दुःखापनयनमिति।।17।।

अर्थःप्रेमी से धन प्राप्त करने के लिए वेश्या को घर बनवाने का, सहेली के पुत्र के किसी संस्कार का, गर्भावस्था की उत्कट इच्छा का अथवा किसी रोग का दुःख दूर करना के बहाना करें। इसके परिणामस्वरूप उसे प्रेमी से धन प्राप्त हो जाएगा।

श्लोक-18. अलंकरैकदेशविक्रयो नायकस्यार्थे।।18।।

अर्थःयदि प्रेमी के किसी कार्य के लिए धन की आवश्यकता हो तो वेश्या को अपने कुछ गहनों को बेचकर उसे धन देना चाहिए।

श्लोक-19. तया शीलितस्य चालंकारस्य भाण्डोपस्यकरस वा-वणिजो विक्रयार्थ दर्शनम्।।19।।

अर्थःउसे अपने प्रिय गहनों को, घर के बर्तन तथा सजावट की चीजों को प्रेमी के सामने ही व्यापारी को बेचने के लिए दिखाने का बहाना करें।

श्लोक-20. प्रतिगणिकानां च सदृशस्य भाण्डस्य व्यतिकरे प्रतिविशिष्टस्य ग्रहणम्।।20।।

अर्थःया उसी के समान दूसरी अन्य गणिकाओं के बर्तनों से अपने बर्तन बदल जाने के कारण से अपने बर्तनों को बड़े कराने का बहाना करें।

श्लोक-21. पूर्वोपकाराणामविस्मरणमनुकीर्तनं च।।21।।

अर्थःप्रेमी द्वारा किए गये उपकारों को न भूलकर उसका वर्णन करें।

श्लोक-22. प्रणिधिभिः प्रतिगणिकानां लाभातिशयं श्रावयेत्।।22।।

अर्थःअपने विश्वास के नौकरों द्वारा दूसरी गणिकाओं को होने वाले अधिक लाभ प्रेमी को सुनवायें।

श्लोक-23. तासु नायक समक्षमात्मनोऽभ्यधिकं लाभं भूतमभूतं वा व्रीडिता नाम वर्णयेत्।।23।।

अर्थःयदि दूसरी गणिकाएं उस वेश्या के यहां आई हो तो प्रेमी के सामने लाभ को बढ़ा-चढ़ाकर उनसे बताएं। यदि फिर भी कुछ लाभ न हो तो प्रेमी की ओर शर्म से देखकर कहे।

श्लोक-24. पूर्वयोगिनां च लाभातिशयेन पुनः सन्धाने यतमानानामाविष्कृतः प्रतिषेधः।।24।।

अर्थःवेश्या के वे प्रेमी जो उनका साथ छोड़ चुके हैं तथा अधिक धन देकर फिर से वह वेश्या से संभोग करना चाहते हों, तो प्रेमी के सामने ही उसे साफ मना कर देना चाहिए।

श्लोक-25. तत्स्पर्धिनां त्यागयोगिनां निदर्शनम्।।25।।

अर्थःप्रेमी से स्पर्धा करने वाले उन लोगों को प्रेमी को दिखाये जो अधिक पैसे देकर वेश्या से सेक्स करने की इच्छा करते हो।

श्लोक-26. न पुनरेष्यतीत बालयाचितकमित्यर्थागमोपायाः।।26।।

अर्थःयदि यह जानकारी प्राप्त हो जाए कि अब यह दोबारा नहीं आएगा तो बच्चों की भांति हठ करके उससे धन मांगे।

Free Hindi PDF Books

श्लोक-27. विरक्तं च नित्यमेव प्रकृतिविक्रियातो विद्यात् मुखवर्णाश्च।।27।।

अर्थःवेश्या अनुराग न रखने वाले लोगों को उसके परिवर्तित स्वभाव तथा चेहरे के बनते-बिगड़ते भावों को देखकर जानकारी प्राप्त कर लें।

श्लोक-28. ऊनमतिरक्तं वा ददाति।।28।।

अर्थःजब प्रेमी के मन में वेश्या के प्रति लगाव कम होने लगता है तो वह कभी कम तो कभी अधिक धन वेश्या को दे देता है।

श्लोक-29. प्रतिलोमैः सम्बध्यते।।29।।

अर्थःप्रेमी के विरोधियों से संबंध बनाने लगता है।

श्लोक-30. व्यपदिश्यान्यत्करोति।।30।।

अर्थःजिस कार्य को कहे उसे न करके दूसरा करने लगता है।

श्लोक-31. उचितमाच्छिनत्ति।।31।।

अर्थःजो सही काम होता है उसे भी वह रोक देता है।

श्लोक-32. प्रतिज्ञातं विस्मरति। अन्यथा वा योजयति।।32।।

अर्थःकेवल प्रेमी देने का वायदा करके भी मना कर देता है। या फिर कहता है कि मैने तो ऐसा वायदा ही नहीं किया है।

श्लोक-33. स्वपक्षैः संज्ञया भाषते।।33।।

अर्थःअपने निजी व्यक्तियों से संकेतों के द्वारा बातें करनी चाहिए।

श्लोक-34. मित्रकार्यमपदिश्यान्यत्र शेते।।34।।

अर्थःकिसी दोस्त के काम का बहाना करके दूसरे स्थान पर जाकर सो जाता है।

श्लोक-35. पूर्वसंसृष्टायाश्च परिजनेन मिथः कथयति।।35।।

अर्थःपहली प्रेमिका के नौकरों से इस प्रेमिका की सभी गुप्त बातों को बता देना चाहिए।

श्लोक-36. तस्य सारद्रव्याणि प्रागवबोधादन्यापदेशेन हस्ते कुर्वीत्।।36।।

Free Hindi PDF Books

अर्थःजब उसे यह बात मालूम हो जाए कि उसके प्रेमी का लगाव धीरे-धीरे करके खत्म हो रहा तो जितना शीघ्र हो सके उसे प्रेमी से अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

श्लोक-37. तानि चास्या हस्तादुत्तमर्णः प्रसह्य गृह्णीयात्।।37।।

अर्थःया फिर प्रेमिका का सिखाया हुआ साहूकार जिसने उसे कर्ज दिया हो उसे चाहिए कि उसके प्रेमी द्वारा एकत्र किये गये धन को वह अपने कब्जे में कर लें।

श्लोक-38. विवदमानेन सहधर्मस्थेषु व्यवहरेदिति विरक्तप्रतिपत्ति।

अर्थःयदि प्रेमी साहूकार से झगड़ा कर ले तो उसे अदालत तक जाना चाहिए। विरक्तिपात्ति समाप्त होता है।

श्लोक-39. सक्तं तु पूर्वाकारिणमप्यफलं व्यलीकेनानुपात्।।39।।

अर्थःवेश्या को चाहिए कि थोड़ा देने वाले के पहले परोपकारी प्रेमी के अपराध करने पर भी उसे धक्का देकर न निकाले।

श्लोक-40. असारं तु निष्प्रतिपत्तिकमुपायतोऽपवाहयेत्। अन्यमवष्टभ्य।।40।।

अर्थःधनहीन लेकिन खाली प्रेमी को किसी धनवान, अनुरक्त व्यक्ति को प्रतिपक्षी बनाकर निकालना चाहिए। स्वयं नहीं।

श्लोक-41. तदनिष्टसेवा। निन्दिताभ्यासः। ओष्ठनिर्भोगः। पादेन भूमेरभिघातः। अविज्ञातविषस्य संकथा। तदिज्ञातेष्वविस्मयः समानदोषाणां निंदा। रहसि चावस्थानम्।।41।।

अर्थःप्रेमी को एकांत या प्रकट में निकालने के लिए प्रेमिका को ये उपाय करने चाहिए- जिसे प्रेमी नहीं चाहता। उसकी सेवा करना, निन्दनीय कार्यों को जान-बूझकर बार-बार करना, होंठों को चबाना, धरती पर पैर पटकना, जिन बातों को नहीं जानता हो उन बातों की बार-बार चर्चा करना, जिन विषयों के बारे में प्रेमी को जानकारी न हो उन पर आश्चर्य प्रकट करना तथा उसकी निंदा करना, उसके अभिमान पर चोट करना, उसके गुरुजनों के साथ रहना, उसकी हर तरफ उपेक्षा रखना, प्रेमी में जो दोष हों उन्हीं के समान दोषों की बुराई करना तथा एकांत में बैठना।

श्लोक-42. रतोपचारेषूद्वेगः। मुखस्यादानम्। जघनस्य रक्षणम्। नखदशनक्षतेभ्यो जुगुप्सा। परिष्वंगे भुजमय्या सूच्चा व्यवधानम्। स्तब्धता गात्राणाम् सक्थ्नोर्व्यत्यासः। निद्रापरत्वं च। श्रान्तमुपलभ्य चोदना। अशक्तौ हासः। शक्तावनभिनन्दनम् दिवापि। भावमुपलभ्य महाजनाभिगमनम्।।42।।

अर्थःजिस व्यक्ति को वेश्या अपने पास से भगाना चाहती हो तो सेक्स के समय में उसके साथ यह आचरण करे- सेक्स के लिए दिये जाने वाले पान, सुगंधि आदि को स्वीकार न करें। चुंबन न करने दें। जांघों पर हाथ न फेरने दें। यदि उसने पहले कभी सेक्स के समय दांतों अथवा नाखूनों से काटा हो तो उसकी निंदा करें। बांहों में भरते समय हाथों को सीने से ढक लें। शरीर के अंगों को तन कर लें। जिससे प्रेमी खींच न सके। दोनों जांघों को एक-दूसरे के ऊपर चढ़ा ले। सेक्स के समय नींद आने का बहाना करें। यदि सेक्स के समय प्रेमी शीघ्र ही स्खलित हो तो उसकी आलोचना करें। यदि प्रेमी की संभोग शक्ति क्षीण पड़ रही हो तो उसकी हंसी उड़ाये तथा अधिक उत्तेजना हो तो उसका कोई भी महत्व न दें। दिन में सेक्स करने पर उसे गधा कहकर पुकारें। यदि प्रेमी की इच्छा सेक्स करने की हो तो उसे बेडरूम से बाहर निकालकर किसी बड़े आदमी से मिलने जाएं।

श्लोक-43. वाक्येषु च्छलग्रहणम्। अनर्मणि हासः। नर्मणि चान्यमपदिश्य हसति वदति तस्तिमन्कटाक्षेण परिजनस्य प्रेक्षणं ताडनं च। आहत्य चास्य कथामन्थाः कथा। तद्वलीकानां व्यसनानां चापारिहार्याणामनुकीर्तनम्। मर्मणां च चेटिकयोपक्षेपणम्।।43।।

अर्थःप्रेमी को अपने ऊपर से हटाने के लिए निम्न बातें प्रेमिका को छेड़नी चाहिए। छल-कपट भरी बातें, बिना खेल के उपहास, खेल में दूसरे के बहाने उपहास करना, उसके कुछ कहने पर उसी को लक्ष्य करके अपने परिजनों की ओर कनखियों से देखना या ताड़ना। उसकी बात को बीच में काटकर दूसरी बात कह देना। प्रेमी की उन आदतों की बुराई करे जो उसकी कमजोरी हो। उसकी गुप्त बातों को अपनी सेविका से बताना।

श्लोक-44. आगते चादर्शनम्। अयाच्ययाचनम्। अंते स्वयं मोक्षश्चेति परिग्रहस्येति दत्तकस्य।।44।।

अर्थःप्रेमिका उपर्युक्त बातें कहकर प्रेमी को मानसिक रूप से प्रताड़ित करे। इसके बाद निम्न कार्य करें- जब भी प्रेमी उससे मिलने आये तो उसे मिलने से इंकार कर देना चाहिए। उससे किसी भी चीज की मांग न करें और उसे नौकरी से निकाल दें। ये सभी बातें आचार्य दत्तक ने कही हैं।

Free Hindi PDF Books

श्लोक-45. परीक्ष्य गम्यैः संयोगः संयुक्तस्यानुरञ्जनम्। रक्तादर्थस्य चादानमंत मोक्षश्च वैशिकक।।45।।

अर्थःइस विषय के दो श्लोक हैं- वेश्या अपने मिलने वालों की परीक्षा करके उससे सेक्स करे। सेक्स करने के बाद उससे सेक्सी बातें करके अधिक से अधिक धन प्राप्त करे। जब उसे धन प्राप्त हो जाए तो प्रेमी को घर से बाहर निकाल दें।

श्लोक-46. एवमेतेन कल्पेन स्थिता वेश्या परिग्रहे। नातिसंधीयते गम्यैः करोत्यर्थांश्च पुष्कलान्।।46।।

अर्थःउपर्युक्त विधि से यदि वेश्या चाहे तो वह अपने प्रेमियों से अधिक से अधिक धन प्राप्त कर सकती है।

यह वैशिक अधिकरण वीरसेना नामक वेश्या के विशेष आग्रह करने पर आचार्य दत्तक ने लिखा था जिसे वात्स्यायन ने कामसूत्र में शामिल किया है। आचार्य दत्तक वेश्या को देखकर उसके शील, स्वभाव तथा आचरण के बारे में समझ जाते थे। उन्होंने इस अधिकरण के अंतर्गत वेश्याओं के बारे में जो जानकारी दी है। वह संक्षिप्त होते हुए भी अपने आप में परिपूर्ण है।

इस अधिकरण के सभी वेश्यावृत्त का सार हमें दशकुमार चरित के उपहार वर्मा के चरित्र में मुनि मरीच तथा काममंजरी वेश्या के सवाल में मिलता है।

वेश्याओं की मनोवृत्ति, उसके रहस्यमय चरित्र तथा दुर्भेध व्यवहार के बारे सचित्र जानकारी युक्त काममंजरी में कहा गया है- वेश्याओं की पैदायशी प्रवृत्ति यह होती है कि जैसे ही घर में लड़की का जन्म होता है। उसे बचपन से सबसे अधिक सुंदर बनाने की कोशिश करते हैं। उसके एक-एक अंग को सुंदर तथा आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न प्रयोग किये जाते हैं। बचपन से ही लड़कियों को संतुलित भोजन दिया जाता है। जिससे उसका सही तरीके से विकास हो सके।

यह प्रवृत्ति केवल वेश्या की ही जाति में नहीं दिखाई देती है। बल्कि साध्वी स्त्रियों को छोड़कर लगभग सभी औरतों की यही प्रवृत्ति होती है। अधिकतर स्त्रियां किसी पुरूष पर उसकी विशेषता के कारण आकर्षित होती हैं। चाहे धन की विशेषता हो या रूप और यौवन की।

वेश्या हो या कुलवधू हो चूंकि स्त्री होने से दोनों एक ही जाति की हैं। सेक्स, वातावरण तथा परिस्थितियों के प्रभाव के कारण कोई स्त्री वेश्या बनती है तो कोई कुलवधू। लेकिन स्वभाव से रहित दोनों नहीं हो सकती। इसीलिए नीतिकार ने समीक्षक तरीके से कहा है कि केवल

स्तनों को छोड़कर तथा न कहीं विष है तथा न कहीं अमृत है। अनुरक्त होने पर वही स्त्री अमृत के समान बनती है तथा विरक्ति होने पर वही स्त्री विष के समान बन जाती है।

नामृतं न विषं किञ्जदेकां मुक्तवा नितम्बिनीम्। सेवामृतलता रक्ता विरक्ता विषवल्लरी।।

इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे वैशिके षष्ठेधिकरणेऽर्थागमोपाया विरलिंगानि चिरक्तप्रतिपत्तिर्निष्कासनक्रमास्तृतीयोऽध्यायः।।

भाग 6 वैशिकं

Free Hindi PDF Books

अध्याय 4 विशीर्णप्रतिसंधान प्रकरण

श्लोक-1. वर्तमानं निष्पीडितार्थमुत्सृजन्ती पूर्वसंसृष्टेन सह सन्दध्यात्।।1।।

अर्थःवेश्या जितना अधिक धन प्राप्त कर चुकी हो, उसे छोड़ती हुई वह अपने पहले प्रेमी से झगड़ा समाप्त कर सुलह कर ले।

श्लोक-2. स चेदवसितार्थो वित्तवान्सानुरागश्च ततः सन्धेयः।।2।।

अर्थःयदि प्रेमी धनवान हो तो उससे वेश्या को धन की प्राप्ति होगी। इसके साथ ही वेश्या से प्रेम करता हो तो वेश्या को शीघ्र ही उसके पास जाना चाहिए।

श्लोक-3. अन्यत्र गतस्तर्कयितव्यः। स कार्ययुक्तया षड्विधः।।3।।

अर्थःअपने पास से गया हुआ प्रेमी दूसरी स्त्री के पास गया होगा। इसकी जानकारी प्राप्त करने के 6 उपाय हैं।

श्लोक-4. इतः स्वयमपसृतस्ततोऽपि स्वयमेवापसृतः।।4।।

अर्थःपहली स्त्री के पास से स्वयं हटा तथा दूसरी स्त्री के पास जाने के बाद स्वयं हटा।

श्लोक-5. इतस्ततश्च निष्कासितापसृतः।।5।।

अर्थःपहली और दूसरी दोनों स्त्रियों से पास से धक्का खाकर ही हटा है।

श्लोक-6. इतः स्वयमपसृतस्ततो निष्कासितापसृतः।।6।

अर्थःपहली स्त्री के पास से स्वयं हटा और दूसरी स्त्री के पास से निकाला गया।

श्लोक-7. इतो निष्कासितापसृतस्ततः स्वयमपसृतः।।7।।

अर्थःपहली स्त्री के पास से स्वयं हटकर दूसरी स्त्री के पास स्थित हो गया।

श्लोक-8. इतो स्वयमपसृतस्तत्र स्थितः।।8।।

अर्थःपहली स्त्री के पास से धक्के खाकर हटा, और दूसरी स्त्री के पास से स्वयं हटा।

श्लोक-9. इतो निष्कासितापसृतस्तत्र स्थितः।।9।।

अर्थःपहली स्त्री के पास से निकाले जाने के बाद दूसरी स्त्री के पास चला गया।

श्लोक-10. इतस्ततश्च स्वयमेवापसृत्योपजपति चेदुभयोर्गुणानपेक्षी चलवुद्धिरसंधेयः।।10।।

अर्थःयदि प्रेमी यहां तथा वहां दोनों स्थानों से स्वयं हटकर फिर आने की कहे तो वह दोनों नायिकाओं के गुणों की परवाह न करने वाला चंचल बुद्धि का होता है। उससे फिर से सेक्स न किया जाए।

श्लोक-11. इतस्ततश्च निष्कासितापसृतः स्थिरबुद्धिः। स चेदन्यतो बहु लभमानया निष्कासितः स्यात्ससारोऽपि तया रोषितो ममामर्षाब्दहु दास्यतीति संधेयः।।11।।

अर्थःजो व्यक्ति यहां तथा वहां दोनों स्थानों से निकाले जाने पर बिल्कुल ही संबंध समाप्त कर लेता है तो वह स्थिर बुद्धि का आदमी होता है। यदि वेश्या ने दूसरे लोगों की अपेक्षा उस हटे हुए स्थिर बुद्धि के प्रेमी से अधिक लाभ प्राप्त किया हो, धनी हो, लेकिन नाराज कर दिया गया हो तथा वेश्या को इस बात पर यकीन हो कि दूसरी पर गुस्सा होने के कारण से मुझे अधिक धन देगा तो उससे अवश्य ही संधि कर लेनी चाहिए।

श्लोक-12. निःसारतया कदर्तया वा त्यक्तो न श्रेयान्।।12।।

अर्थःयदि प्रेमी गरीबी अथवा दुष्टता के कारण से हटाया गया हो तो उससे मिलना अच्छा नहीं होता है।

श्लोक-13. इतः स्वयमपसृतस्तो निष्कासितापसृतो यद्यतिरिक्तमादौ दद्यात्ततः प्रतिग्राह्यः।।13।।

अर्थःएक वेश्या के यहां से स्वयं अलग हुआ तथा किसी अन्य वेश्या के घर से निकाला गया प्रेमी पेशगी धन दे तो वेश्या उसके साथ सेक्स संबंध बना सकती है।

श्लोक-14. इतः स्वयपसृत्य तत्र स्थित उपजपंस्तर्कयितव्यः।।14।।

अर्थःएक स्थान से हटा हुआ तथा दूसरी जगह जाकर जम गया फिर कुछ कहलाता है तो उसके कहने पर भली प्रकार कर लेना चाहिए।

श्लोक-15. विशेषार्थी चागतस्ततो विशेषमपश्यन्नगन्तुकामो मयि मां जिज्ञासितुकामः स आगत्य सानुरागात्वाद्दास्यति।। तस्यां वा दोषानद्दष्ट्वा मयि भूयिष्ठान्गुणानधुना पश्यति स गुणदर्शी भूयष्ठं दास्यति।।15।।

अर्थःयह प्रेमी विशेषता को पसंद करता है इसीलिए मुझे छोड़कर चला गया था, लेकिन मुझसे ज्यादा विशेषता उसमें न पाकर फिर वापस आना चाहता है तथा मेरे पास रहकर मेरी विशेषताओं को जानना चाहता है। मुझ पर आकर्षित है इस कारण से यहां आकर जरूर धन देगा। या दूसरों की अपेक्षा मुझमें खास गुणों को देखकर यह गुणग्राही प्रेमी विपुल धन देगा।

श्लोक-16. बालो वा नैकत्रद्दष्टिरतिसंधानप्रधानो वा हरिद्रारागो वा यत्किंचनकारी वेत्यवेत्य संदध्यात्र वा।।16।।

अर्थःयह तो बुद्धि का प्रेमी है, स्थिरचित्त एवं विचारशील नहीं है। हल्दी के समान ही इसका अस्थायी रंग है, जो दिल में आता है कर बैठता है- इन सभी बातों पर विचार करके प्रेमिका उसे देखे। यदि फिर सेक्स करने लायक हो तो सेक्स करे नहीं तो नहीं।

श्लोक-17. इतो निष्कासितापसृतस्ततः स्वयमपसृत उपजपंस्तर्कयितवस्यः।।17।।

अर्थःएक वेश्या के द्वारा निकाला गया प्रेमी दूसरी वेश्या के पास जाकर वहां से स्वयं चला जाए तथा यदि फिर से मिलने के लिए संदेश भेजे तो उस पर विचार करना चाहिए।

श्लोक-18. अनुरागादागन्तुकामः स बहुदास्यति। मम गुणैर्भावितो योऽन्यस्यां न रमते।

अर्थःवेश्या सोचती है कि उसका प्रेमी उसके प्रति आकर्षित होने के कारण आने की इच्छा कर रहा है। इसलिए उससे अधिक धन प्राप्त होगा। वह मेरे गुणों से वह प्रभावित है, इसलिए दूसरी वेश्या में उसका मन नहीं लग रहा है।

श्लोक-19. पूर्वमयोगेन वा मया निष्कासितः स मां शीलयित्वा वैरं निर्यातयितुकामो धनमभियोगाद्वा मयास्यापहृतं तद्विश्वास्य प्रतीपमादातुकामो निर्वेष्टुकामो वा मां वर्तमानाद्भदयित्वा त्युक्तुकाम इत्यकल्याणबुद्धिररसंधेयः।।19।।

अर्थःसबसे पहले इसको मैने अन्यायपूर्वक निकाला था इस कारण से अब यह मुझसे मिलकर अपनी दुश्मनी निकालना चाहता है। मैने इधर-उधर करके इसका सारा धन प्राप्त कर लिया है। इस कारण से अब यह मुझे यकीन दिलाकर उस धन को हड़पना चाहता है। या फिर मेरे वर्तमान प्रेमी को मुझसे तोड़कर अलग करना चाहता है। इस प्रकार से यह अशुभ संकेत हुआ। इसलिए ऐसे प्रेमी से बिल्कुल भी संधि न करें।

श्लोक-20. अन्यथाबुद्धिः कालेन लम्भयितव्यः।।20।।

अर्थःयदि वह केवल उसके वशीभूत होकर आना चाहता हो तो उसे कुछ समय बाद मिलना चाहिए। उससे मिलने में किसी भी प्रकार की जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

श्लोक-21. इतो निष्कासितस्तत्र स्थिर उपजपत्रेतेन व्याख्यातः।।21।।

अर्थःजो प्रेमी अपने यहां से निकाल दिये जाने पर दूसरी वेश्या के पास चला गया हो तथा दुबारा मिलने के लिए किसी से कहलवा रहा हो तो, वह यदि मिलने लायक हो तो मिले नहीं तो न मिलें।

श्लोक-22. तेषूपजपत्स्वन्यत्र स्थितः स्वयमुपजपेत्।।22।।

अर्थःजो प्रेमी अपने यहां से जा करके दूसरी स्त्री के पास रहने लगे और संदेश भेजने पर वापस न आये तो उससे स्वयं बातें करनी चाहिए।

श्लोक-23. व्यलाकार्थं निष्कासितो मयासावन्यत्र गतो यत्नादानेतव्य।।23।।

अर्थःमैने तो अपने इसी प्रेमी को उसकी गलती के कारण निकाला था। मेरे यहां से जाने के बाद वह दूसरी स्त्री के पास जाकर रहने लगा। इसलिए यदि वह दुबारा आने की कोशिश कर रहा है तो उसे बुला लेना चाहिए।

श्लोक-24. इतः प्रवृत्तसंभाषो वा ततो भेदमवाप्स्यति।।24।।

अर्थःयदि वेश्या बात करने की पहल करती है तो वह वहां से अलग होकर भी आ सकता है।

श्लोक-25. तदर्थाभिघातं करिष्यति।।25।।

अर्थःमेरे यहां से आ जाने के बाद वह उसको आर्थिक रूप से हानि भी पहुंचा सकता है।

श्लोक-26. अर्थागमकालो वास्य। स्थानवृद्धिरस्य जाता। लब्धमनेनाधिकरणम्। दारैर्वियुक्तः। पारतंत्र्याद्व्यावृत्तः। पित्रा भ्रात्रा वा विभक्तः।।26।।

अर्थःउसको बिजनेस अथवा नौकरी से अधिक आमदनी हुई है। जर जमीन आदि से भी विकास हुआ। अदालत आदि से भी रुपया मिल गया। अपनी पत्नी से पिता तथा भाइयों से अलग हो जाने से वह पूर्णता स्वतंत्र हो गया। ऐसे समय में ही वह अधिक से अधिक धन प्राप्त कर सकता है।

श्लोक-27. अनेन वा प्रतिबद्धमनेन संधिं कृत्वा नायकं धनिनमवाप्स्यामि।।27।।

अर्थःमेरा प्रेमी उससे मिला हुआ है और मैं उससे मिलकर उस धनवान को हासिल कर लूंगी।

श्लोक-28. विमानिता वा भार्यता तमेव तस्यां विक्रयमयिष्यामि।।28।।

अर्थःउसने मेरी बेइज्जती की है या फिर अपनी पत्नी से जाकर मिल गया है, अब मैं उसे उसकी पत्नी से अलग करके दोनों को आपस में लड़वा दें।

श्लोक-29. अस्य वा मित्रं मदद्वेषिणीं सपत्नी कामयते तदमुना भेदयिष्यामि।।29।।

अर्थः इसका दोस्त मुझसे दुश्मनी रखने वाली मेरी सौतन को चाहता है तो इसके दोस्त को इससे लड़ा दूंगी।

श्लोक-30. चलचित्ततया वा लाघवमेनमापादयिष्यामीति।।30।।

अर्थःइसको चंचलचित्त सिद्ध करके दूसरी वेश्याओं की नजर से एकदम गिरा दूंगी।

श्लोक-31. तस्य पीठमर्दादयो मातुर्दौःशील्येन नायिकायाः सत्यप्यनुरागे विवशायाः पूर्वः निष्कासनं वर्णयेयुः।।13।।

अर्थः आदि विश्वस्त नौकर जाकर प्रेमी से कहें कि वह तुम पर आकर्षित है लेकिन मां की कुटिलता के कारण विवश होकर उसने अपने आपको निकाल दिया है।

श्लोक-32. वर्तमानेन चाकामायाः संसर्गं विद्षं च।।32।।

अर्थःजो इस वक्त इसका प्रेमी है उसके साथ लगाव से सेक्स नहीं करती है, बल्कि उसके मन में नफरत बनी रहती है।

श्लोक-33. तस्याश्च साभिज्ञानैः पूर्वानुरागैरनं प्रत्यापयेयुः।।33।।

अर्थःवे पीठमर्द (वेश्या के सहायक) आदि सेवक निकाले गये प्रेमी से निकलने से पहले का प्रेमिका का अनुराग बताकर उसे यकीन दिलाने की कोशिश करें।

श्लोक-34. अभिज्ञानं च तत्कृतोपकारसंबंद्धं स्यादिति विशीर्णप्रति सधानम्।।34।।

अर्थःउसके प्यार की पहचान उसके द्वारा किये गये उपकारों से संबंध कराना चाहिए। यह वियुक्त नायक का प्रेम होता है।

श्लोक-35. अपूर्वपूर्वसंसृष्टयोः पूर्वसंसृष्टः श्रेयान्। स हि विदितशीलो दृष्टरागश्च सूपचारो भवतीत्याचार्याः।।35।।

अर्थःवेश्या से पहले मिले हुए अथवा कभी न मिले हुए लोगों में से पहले मिला हुआ व्यक्ति श्रेष्ठ होता है क्योंकि उसके शील स्वभाव से परिचय बना रहता है। उसका प्रेम जाना-पहचाना हुआ है। आचार्यों का मानना है कि उससे सरलता से अपनी प्रसंसा करायी जा सकती है।

श्लोक-36. पूर्वसंसृष्टः सर्वतो निष्पीडितार्थत्वात्रात्यर्थमर्थदो दुःखं च पुनर्विश्वासयितुम्। अपूर्वस्तु सुखेनानुरज्यत इति वात्स्यायनः।।36।।

अर्थःआचार्य वात्स्यान का मानना है कि धन प्राप्त करने के लिए ही मिला जाता है। यदि पहला प्रेमी धनहीन हो गया हो तो उससे मिलना बेकार होता है। इसके अलावा उसे अपना विश्वास प्राप्त करना भी कठिन होता है तथा दूसरा नया प्रेमी तो सरलता से आकर्षित किया जा सकता है।

श्लोक-37. तथापि पुरूषप्रकतितो विशेषः।।37।।

अर्थःयद्यपि स्वभाव के आधार पर पुरुषों में भी विशेषताएं होती हैं। कोई नया आदमी ऐसा होता है जो आदत से कृपण होता है। कुछ भी नहीं देता है अथवा खुशामद करने पर भी अनुरक्त नहीं होता है। कुछ आदमी ऐसे होते हैं जो चूस लिए जाने पर भी, निकाल दिये जाने पर भी, प्रेमिका पर अपना विश्वास बनाये रखते हैं।

श्लोक-38. भवन्ति चात्र श्लोकः- अन्यां भेदयितुं गम्यादन्यतो गम्यमेव वा। स्थितस्य चोपघातार्थं पुनः संधानमिष्यते।।38।।

अर्थःइस विषय के श्लोक हैं- 19वें, 28वें तथा 25वें सूत्र में बताई गयी बातों को यहां बताया जा रहा है कि दूसरी प्रेमिका से बिछड़ा हुआ मिलने वाला प्रेमी अथवा दूसरी से अलग करने के लिए प्रेमी को मिलाया जा सकता है।

श्लोक-39. विभेत्यन्यस्य संयोगाद्यलीकानी च नेक्षते अतिसक्तः पुमान्यत्र भयाद्दह्व ददाति च।।39।।

अर्थःअत्याधिक आसक्त प्रेमी जो दूसरे से सेक्स करने से डरता है और प्रेमिका के अपराधों को भी नहीं देखता है- ऐसा आदमी डर के कारण बहुत अधिक धन दे जाता है।

श्लोक-40. असक्तमभिन्नदेत सक्तं परिभवेत्तथा। अन्य दूतानुपाते च यः स्यादतिविशारदः।।40।।

अर्थःजो प्रेमी बहुत अधिक चालाक हो। उसे चाहिए कि किसी दूसरे का दूत आ जाने पर उसके सम्मुख असमर्थ की प्रशंसा करें और समर्थ की बुराई करें।

श्लोक-41. तत्रोपयायिनं पूर्वं नारी कालेन योजयेत् भवेच्चाच्छित्रसंधाना न च सक्तं परित्यजेत्।।4।।

अर्थःस्त्री को चाहिए कि कभी यदि नया धनवान प्रेमी तथा मिलने वाला बिछड़ा हुआ प्रेमी दोनों आ रहे हों तो जो अधिक धनी हो उसी से ही सेक्स करें क्योंकि बिछड़ा हुआ प्रेमी प्रतीक्षा भी कर सकता है। बिछड़े हुए से सेक्स करने में न तो हिचकिचाहट करें तथा न धनवान प्रेमी का त्याग करें।

श्लोक-42. सक्तं तु वशिनं नारी संभाप्याप्यन्यतो व्रजेत् ततश्चार्थमुपादाय सक्तमेवानुरञ्जयेत्।।42।।

अर्थःनारी (वेश्या) वशीभूत प्रेमी से बताकर दूसरे स्थान पर चली जाए और वहां से धन लाकर वशीभूत प्रेमी को प्रसन्न करे।

श्लोक-43. आयतिं प्रसमीक्ष्यादौ लाभं प्रीतिं च पुष्कलाम्। सौहृदं प्रतिसंदध्याद्विशीर्णं स्त्री विचक्षणा।।43।।

अर्थःचतुर तथा चालाक स्त्री को चाहिए कि सबसे पहले प्रभाव, लाभ, अधिक प्रेम तथा सौहार्द्र देख लें, तभी बिछड़े हुए को मिलाएं।

अनेक उपायों से वेश्याएं अपने प्रेमी का धन ऐंठकर उसे बिल्कुल बर्बाद कर देती हैं। उसके बाद उसे अपने पास से निकाल देती हैं। इसके बारे में पिछले प्रकरण में भी बताया गया है। इस प्रकरण में उन प्रेमियों के मानसिक वृत्त का उल्लेख किया गया है। जो वेश्या के द्वारा निकाले जाने पर उस पर मोहित रहता है। इस प्रकार के विवेकशून्य प्रेमियों को वेश्या फिर से किस हालत में स्वीकार करे- इसके बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है।

उन्होंने वेश्याओं तथा उनके प्रेमियों का मनोविश्लेषण करते हुए कहा है कि वियोग तथा मिलन की स्थिति में वेश्या को सबसे पहले पुरूष की अंतःप्रकृति का अध्ययन करके उसे मिलाएं अथवा हटाएं। कोई आदमी ऐसा होता है कि पुराने प्रेमी के हट जाने पर वह वेश्या का साथी उसके सदाचार तथा दीनता के सामने फेल हो जाया करता है। इसके अलावा कुछ लोग ऐसे स्वभाव के होते हैं जो वेश्या के द्वारा अपमानित होकर निकाले जाने तथा सारी संपत्ति

और प्रतिष्ठा गंवा देने के बावजूद उसी के प्रति आकर्षित रहते हैं।

इस प्रकरण के अंतर्गत वेश्याओं की चंचलता, अस्थिर बुद्धि तथा स्वार्थ के बारे में वर्णन किया गया है। वास्तव में देखा जाये तो यह पता चलता है कि वेश्याओं की मानसिकता समुद्र की लहरों की तरह चंचल होती है। शाम के समय से सुबह तक आकाश की क्षणिक लालिमा की तरह वेश्याओं के यहां उनके प्रेमियों की अवस्थिति क्षणभंगुर होती है। जिस प्रकार पैर में अलता लगाने के लिए मेंहदी की पत्तियों का रस निचोड़ करके उन्हें फेंक दिया जाता है, उसी प्रकार वेश्याएं भी अपने प्रेमी की धनशक्ति, पुरूषार्थ-शक्ति निचोड़कर उन्हें अलग फेंक देती हैं।

इस सहजबोध को स्त्री अच्छी प्रकार से जानती है कि जीव तथा जड़ एक-दूसरे के बिना कोई भी परिणाम निकालने में सफल नहीं हो सकते हैं। इसलिए उसके प्रेम में शरीर और आत्मा दोनों का लगाव रहता है। लेकिन युवक जब उसे इस तरह का प्रेम करने दें। पुरूष की इसी गलती का अंजाम है कि अधिकतर दाम्पत्य जीवन, अधिकतर वेश्या भोग, जीवन, निराशा तथा अशांति के माहौल में तड़प रहे हैं।

इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे वैशिके षष्ठेऽधिकरणे विशीर्णप्रतिसंधानं चतुर्थोऽध्यायः।।

भाग 6 वैशिकं

Free Hindi PDF Books

अध्याय 5 लाभ-विशेष प्रकरण

श्लोक-1. गम्यबाहुल्ये बहु प्रतिदिनं च लभमाना नैकं प्रतिगृह्णीयात्।।1।।

अर्थःवेश्या के पास सेक्स करने के लिए आने वालों की संख्या अधिक होने से उनमें परस्पर प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है। इस कारण से वेश्या की आमदनी बढ़ जाती है। इसलिए वेश्या को किसी एक व्यक्ति विशेष से सेक्स न करके प्रतिदिन नये ग्राहकों से सेक्स करना चाहिए।

श्लोक-2. देशकालं स्थितिमात्मनो गुणान्सौभाग्यं चान्याभ्यो न्यूनातिरिक्तं चावेक्ष्य रजन्यामर्थं स्थापयेत्।।2।।

अर्थःकिसी भी वेश्या को एक रात की फीस का निर्धारण देश तथा समय, वर्तमान स्थिति, गुण, सौभाग्य तथा वेश्याओं से अपने रूप, रंग, गुण आदि की तुलना करने के बाद निर्धारण करना चाहिए।

श्लोक-3. गम्ये दूतांश्च प्रयोजयेत्। तत्प्रतिबद्धाश्च स्वयं प्रहिणुयात्।।3।।

अर्थःसेक्स करने लायक व्यक्ति का उद्देश्य जानने के लिए अपने दूतों को लगा दें तथा स्वयं को उसके संपर्क के लोगों के द्वारा अपने अभिप्राय भेजें।

श्लोक-4. द्विस्त्रिश्चरिति लाभातिशयग्रहार्थंमेकस्यापि गच्छेत्। परिग्रहं च चरेत्।।4।।

अर्थःउससे अधिक धन प्राप्त करने के लिए 3-4 दिनों तक लगातार एक नियत फीस पर ही सेक्स करायें। तथा उसकी सेवा उसकी पत्नी के समान बनकर स्वयं ही करना चाहिए।

श्लोक-5. गम्ययौगपद्ये तु लाभसाम्ये यद्द्रव्यार्थिनी स्यात्तद्दायिनि विशेषः प्रत्यक्ष इत्याचार्यः।।5।।

अर्थःआचार्यों के अनुसार यदि किसी वेश्या के पास एक साथ कई लोग सेक्स करने के लिए आ जाएं तथा सभी सेक्स करने के लिए एक समान ही फीस देने को तैयार हो तो ऐसी स्थिति में वेश्या को जिससे फीस ले लेगी तो दूसरा उससे ज्यादा देगा।

श्लोक-6. अप्रत्यादेयत्वात्सर्वकार्याणां तन्मूलत्वाद्धिरण्यद इति वात्स्यायनः।।6।।

अर्थःआचार्य वात्स्यायन का मानना है कि अविश्वास की स्थिति में भी न लौटाया जाने वाला पैसा ही सभी कार्यों का मूल होता है अथवा आभूषण और गहने आदि वस्तुएं पैसों से ही

Free Hindi PDF Books

खरीदी जा सकती हैं। इसलिए वेश्या को जहां तक हो सके अपने प्रेमी से पैसे ही प्राप्त करने चाहिए।

श्लोक-7. सुवर्णरजतताम्रकांस्यलोहभाण्डोपस्करास्तरणप्रावरण वासोविशेषगंधद्रव्यकटुकभाण्डघृततैलधान्यपशुजातीनां पूर्वपूर्वतो विशेषः।।7।।

अर्थः सोना, चांदी, तांबा, लोहा, बर्तन, सामान, बिस्तर, लिहाफ, कम्बल, रेशमी, कपड़े, चंदन आदि गंध वाले पदार्थ, कालीमिर्च घड़े आदि, घी तेल अनाज, पशु इन वस्तुओं में अंत में पहले की तरह एक-एक चीजें उत्तम होती हैं। इसलिए वेश्या को ऐसी ही चीजें लानी चाहिए।

श्लोक-8. यत्तत्र साम्याद्वा द्रव्यसाम्ये मित्रवाक्यदतिपातित्वादायतितो गम्यगुणतः प्रीतितश्च।।8।।

अर्थःयदि दो समान प्रेमी हो तो शुभचिन्तक लोग जिसे पसंद करें या जिसको अधिक गुणी, सुंदर तथा प्रभावशाली समझें, उसी की दी गयी चीजों को ग्रहण करें।

श्लोक-9. रागित्यागिनोस्त्यागिनी विशेषः प्रत्यक्ष इत्याचार्याः।।9।।

अर्थः आचार्यों का कहना है कि अधिक अनुराग रखने वाले की अपेक्षा दानशील त्यागी से अधिक लाभ मिलना निश्चित होता है।

श्लोक-10. शक्यो हि रागिणी त्याग आधातुम्।।10।।

अर्थः न देने वाले व्यक्ति से भी उपायों द्वारा त्याग कराया जा सकता है।

श्लोक-11. लुब्धोऽपि हि रक्तस्त्यजति न तु त्यागी निर्बन्धाद्रज्यत इति वात्स्यायनः।।।11।।

अर्थः आचार्य वात्स्यायन का कहना है कि अनुरक्त लालची होते हुए भी धन दे सकता है लेकिन त्यागी को अनुरक्त बनना काफी कठिन होता है।

श्लोक-12. तत्रापि धनवदधनवतोर्धनवति विशेषः। त्यागिप्रयोजनकर्त्रोः प्रयोजनकर्तरि विशेषः प्रत्यक्ष इत्याचार्याः।।12।।

अर्थः आचार्यों का मानना है कि यहां पर भी अमीर तथा निर्धन लोगों में धनवान विशेष होता है तथा त्यागी और नायिका का स्वार्थ सिद्ध करने वाला प्रेमी विशेष होता है।

श्लोक-13. प्रयोजनकर्ता सकृत्कृत्वा कृतिनमात्मानं मन्यते त्यागी पुनरतीतं नापेक्षत इति वात्स्यायनः।।13।।

Free Hindi PDF Books

अर्थः आचार्य वात्स्यायन का कहना है कि वेश्या का प्रयोजन सिद्ध करने वाला एक बार प्रयोजन सिद्ध करके यह सोचता है कि एक बार काम कर दिया है. अब क्यों करूं। क्योंकि दानशील त्यागी प्रेमी तो जो धन दे चुका होता है उसके बारे में सोचता तक भी नहीं है।

श्लोक-14. तत्राप्यात्ययिकतो विशेषः।।14।।

अर्थः आवश्यकता के अनुसार इन दोनों में भी विशेषताएं होती हैं।

श्लोक-15. कृतज्ञत्यागिनोस्त्यागिनि विशेषः प्रत्यक्ष इत्याचार्याः।।15।।

अर्थःपहले के आचार्यों का कहना है कि कृतज्ञ तथा त्यागी इन दोनों प्रकार के व्यक्तियों में त्यागी व्यक्ति से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

श्लोक-16. चिरमाराधितोऽपि त्यागी व्यलीकमेकमुपलभ्य प्रतिगणिकया वा मिथ्यादूषितः श्रममतीतं नापेक्षते।।16।।

अर्थःबहुत दिनों तक उपायों द्वारा साबित किया गया त्यागी वेश्या के एक अपराध को देखकर या दूसरी सामने की वेश्याओं से बहकाया जाकर वेश्या के किये गये परिश्रम के दुखों की परवाह नहीं करता है।

श्लोक-17. प्रायेण हि तेजस्विन ऋजुवोऽनाद्दताश्च त्यागितो भवन्ति।।17।।

अर्थःऔर त्यागी प्रायः तेजस्वी व्यक्ति सरल स्वभाव के नहीं होते हैं। यदि कहीं पर उनका अनादर होता है तो वे उसे बर्दाश्त नहीं करते हैं।

श्लोक-18. कृतज्ञस्तु पूर्वश्रमापेक्षी न सहसा विरज्यते। परीक्षितशीलत्वाश्च न मिथ्या दूष्यत इति वात्स्यायनः।।18।।

अर्थःआचार्य वात्स्यायन का कहना है कि कृतज्ञ व्यक्ति परिश्रम को समझता है। इसीलिए वह एकाएक विरक्त नहीं होता है, वह प्रेमिका के स्वभाव से परिचित रहता है इसलिए दूसरी वेश्याओं के बहकाने में नहीं आता है।

श्लोक-19. तत्राप्यापतितो विशेषः।।19।।

अर्थःअनुरक्त, त्यागी तथा कृतज्ञ इन तीनों में से वेश्या को जिससे सबसे अधिक धन प्राप्त उसी के साथ सेक्स करना चाहिए।

Free Hindi PDF Books

श्लोक-20. मित्रवचनार्थागमयोरर्थागमे विशेषः प्रत्यक्ष इत्याचार्याः।।20।।

अर्थःपहले आचार्यों के अनुसार दोस्तों के सुझाव तथा धन की प्राप्ति इन दोनों में से धन का लाभ प्रत्यक्ष विशेषता रखता है।

श्लोक-21. सोऽपि ह्यर्थागमो भवति। मित्रं तु सकृद्वाक्ये प्रतिहते कलुषितं स्यादिति वात्स्यायनः।।21।।

अर्थःआचार्य वात्स्यायन के अनुसार दोस्तों की बातें न मानने पर भी धन तो प्राप्त होगा ही लेकिन बात न मानी जाने पर दोस्त नाराज हो जाएं तो उनसे बनने वाले सभी कार्य बिगड़ जाते हैं।

श्लोक-22. तत्राप्यतिपाततो विशेषः।।22।।

अर्थःइस धन संचय में भी फिर न मिलने वाले को अवश्य वाले के जरूर प्राप्त कर लेना चाहिए।

श्लोक-23. तत्र कार्यसंदर्शनेन मित्रमनुनीय श्वोभूते वचनमस्त्विवति ततोऽतिपातिनमर्थं प्रतिगृहणीयात्।।23।।

अर्थःकाम के बहाने दोस्त से अनुनय विनय करके शीघ्र ही लाभ प्राप्त कर लें और उससे कहे कि मैं तुम्हारी बात अवश्य ही पूरी कर दूंगी।

श्लोक-24. अर्थागमानर्थप्रतीघातयोरर्थागमे विशेषः प्रत्यक्ष इत्याचार्याः।।24।।

अर्थःअर्थलाभ तथा अनर्थ का निवारण- इन दोनों में धनागम विशेष माना जाता है- ऐसा पहले के आचार्यों का मानना है।

श्लोक-25. अर्थः परिमितावच्छेदः, अनर्थः पुनः सकृत्प्रसृतो न ज्ञायते क्कावतिष्ठत इति वात्स्यायनः।।25।।

अर्थः आचार्य वात्स्यायन का कहना है कि धन हमेशा ही प्राप्त होता रहता है लेकिन यदि अनर्थ होना शुरू हो जाता है तो उसके अंत का कोई ठिकाना नहीं होता है।

श्लोक-26. तत्रापि गुरुलाघवकृतो विशेषः।।26।।

अर्थःइसके अंतर्गत भी न्यूनाधिक्य समझकर विशेष को ग्रहण कर लेना आवश्यक होता है।

Free Hindi PDF Books

श्लोक-27. एतेनार्थसंशायदनर्थप्रतीकारे विशेषो व्याख्यातः।।27।।

अर्थःइस बात से यह स्पष्ट होता है कि अर्थ के संशय में अनर्थ की रोकथाम करने में ही विशेष लाभ प्राप्त होता है।

श्लोक-28. देवकुलतडारामाणां करणम्, स्थलीनामग्निचैत्यानां निबंधन, गोसहस्त्राणां पात्रान्तरितं ब्राह्मणेभ्यो दानम्, देवतानां पूजोपहारप्रवर्तनम्, तद्ययसहिष्णोर्वा धनस्य परिग्रहणमित्युत्तगणिकानां लाभातिशयः।।28।।

अर्थःजो उत्तम वर्ग की नारी होती हैं उन्हें चाहिए कि वह अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए मंदिर बनवायें। तालाब का निर्माण बनायें। बाग-बगीचे लगवायें। नीची जगहों में लोगों को आने-जाने की सुविधा के पुल का निर्माण करायें। अपने निवास स्थान से बाहर मिट्टी का घर बनाकर उसमें अग्निहोत्र का सारा सामान रखकर रोजाना अग्निहोत्र करायें। किसी सुपात्र व्यक्ति को जरिया बनाकर उसके द्वारा ब्राह्मणों को हजार गायें दान में दें। देवताओं के भोग प्रसाद की व्यवस्था करें। इस प्रकार के ऐसे ही लोकोपकारी तथा धार्मिक कार्यों को अच्छी तरह करने का खर्च बर्दाश्त करें तो उनके अधिक लाभ का उपयोग भी हो जाएगा।

श्लोक-29. सार्वांगिकोऽलंकारयोगो गृहस्योदारस्य करणम्। महार्हैर्भाण्डैः परिचारकैश्च गृहपरिच्छदस्योज्जवलततेति रूपाजीवानां लाभातिशयः।।29।।

अर्थःमध्यम वर्ग वाली रेखाएं विशेष लाभ करने के लिए संपूर्ण शरीर पर गहने धारण करें, निवास स्थान को कलात्मक तरीके से सजाकर रखें तथा उसमें कीमती बर्तन रखें हो, नौकर-चाकर, कमरों की खिड़कियों, दरवाजों, पर्दों को साफ करने में लगे रहें। घर के सभी कपड़े, पर्दे अच्छी तरह से साफ रखने चाहिए।

श्लोक-30. नित्यं शुक्लामाच्छादनमपक्षुधमत्रपानं नित्यं सौगन्धिकेन ताम्बूलेन च योगः सहिरण्यभागलंकरणमिति कुम्भदासीनां लाभातिशयः।।30।।

अर्थःअधम वर्ग की कुम्भदासी वेश्याओं को अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन साफ कपड़े पहनने चाहिए। भरपेट भोजन करना चाहिए। परफ्यूम, तेल और पान का भी उपयोग करना चाहिए तथा चांदी के गहनों के साथ कुछ सोने के गहने भी पहनने चाहिए।

श्लोक-31. एतेन प्रदेशेन मध्यामाध्यमानामपि लाभातिशयान् सर्वासामेव योजयेदित्याचार्याः।।31।।

Free Hindi PDF Books

अर्थःपहले के आचार्यों का मानना है कि उत्तमा, मध्यमा, अधमा, गणिका के साथ ही अधिक लाभ को भी उत्तम, मध्यम तथा अधम ही समझना चाहिए।

श्लोक-32. देशकालविभवसामर्थ्यानुरागलोकप्रवृत्तिवशादनियतलाभादियमवृत्तिरिति वात्स्यायनः।।32।।

अर्थःआचार्य वात्स्यायन के अनुसार देश, समय, वैभव, सामर्थ्य, अनुराग तथा लोकव्यवहार के कारण से लाभ हमेशा नहीं होता रह सकता है। इसलिए धन-प्रधान वेश्याओं की जिस वृत्ति के बारे में बताया गया है वह कभी भी समान नहीं रह सकती है।

श्लोक-33. गम्यमन्यतो निवारयितुकामा सक्तमन्यस्यामपहर्तुकामा वा अन्यां वा लाभतो वियुयुक्षमाणागम्यंसंसर्गादात्मनः स्थानं वृद्धिमायतिमभिगम्यतां त मन्यमाना अनर्थ प्रतीकारे वा साहाय्यमेनं कारयितुकामा सक्तस्य वान्यम् व्यलीकार्थिनी पूर्वोपकारमकृतमिव पश्यंती केवलप्रीत्यर्थिनी वा कल्याणबुद्धेरल्पमपि लाभं प्रतिगृहणीयात्।।33।।

अर्थःमौके और आवश्यकता के अनुसार कभी थोड़ा फायदा भी ग्रहण कर लेना चाहिए। किस हालत तथा स्थान में वेश्या को थोड़ा लाभ ग्रहण करना चाहिए, कह रहे हैं-

प्रेमी को किसी दूसरी गणिका के पास सेक्स के लिए जाने से रोकने में, या उसको फायदे से वंचित करने में, प्रेमी से संसर्ग से घर, मंदिर आदि कोई स्थान बनाने में, अपनी वृद्धि करने में, अपना प्रभाव स्थापित करने में, दूसरे प्रेमियों को आकर्षित करने के लिए, अपनी पसंद की कोई वस्तु बनवाने में, या पहले किये गये उपकारी को भूलकर गरीब प्रेमी को अपराधी ठहराकर उसे छोड़ने में तथा किसी शुभचिंतक आदमी को अपना प्रेमी बनाने में गणिका थोड़ा-बहुत लाभ भी प्राप्त कर सकती है।

श्लोक-34. आयत्यर्थिनी तु तमाश्रित्य चानर्थ प्रतिचिकीर्षन्ती नैव प्रतिगृहणीयात्।।34।।

अर्थःयदि भविष्य में वेश्या बड़ा फायदा देखती है और ऐसा करने में कोई विशेष परेशानी हो तो प्रेमी से तुरंत ही कुछ नहीं लेना चाहिए।

श्लोक-35. त्यक्षाम्येनमन्यतः प्रतिसंधास्यामि, गमिष्यति दारैर्योक्ष्यते नाशयिष्यत्यनर्थान्, अंकुशभूत उत्तराध्यक्षोऽस्यागमिष्यति स्वामी पिता वा, स्थानभ्रंशो वास्य भविष्यति चलचित्तश्चेति मन्यमाना तदात्वेतस्यमाल्लाभमित्छेत्।।35।।

अर्थःइस प्रेमी को छोड़कर दूसरे से संबंध जोड़ूंगी, यह स्वयं ही चला जाएगा, अपनी पत्नी से फिर मिल जाएगा। या, यह अड़चनों, रुकावटों को दूर कर देगा, इसके ऊपर पिता आदि का नियंत्रण है, या यह अपने पद अथवा अधिकार से भ्रष्ट हो जाएगा अथवा चंचल मन का है। यदि वेश्या ऐसा समझती है तो ऐसे नायक से शीघ्र मिले, उसी समय ले ले।

श्लोक-36. प्रतिज्ञातमीश्वरेण प्रतिग्रहं लप्स्यते अधिकरणं स्थानं वा प्राप्यसि वृत्तिकालोऽस्य वा आसन्नः वाहनमस्यागमिष्यति स्थलपत्रं वा सस्यमस्य पक्ष्यते कृतमस्मित्र नश्यति नित्यमविसंवादको वेत्यायत्यामिच्छेत्। परिग्रहकल्पं वाचरेत्।।36।।

अर्थःराजा अथवा शासन से इसे धन की प्राप्ति निश्चित होगी, या यह न्यायालय अथवा अक्षपटल में कोई ऊंचे पद को प्राप्त करेगा। इसे जीविका समीप भविष्य में मिलेगी, व्यापारिक चीजें बेचकर इसके जहाज अथवा दूसरे व्यापारिक वाहन शीघ्र ही वापस आने वाले हैं, उनकी जमींदारी या जागीर की जमीन उपजाऊ हैं। इसकी खेती पककर तैयार होने वाली है। यह कृतज्ञ है, इससे संसर्ग करना हानिकारक होगा, यह गप्पी या धूर्त नहीं है, यह जो भी कहेगा, उसको पूरा भी करेगा, इसी तरह अन्य प्रेमियों में से किसी एक से भविष्य में पूरा फायदा उठाने की इच्छा तथा आशा रखकर गणिका उसकी सेवा उसकी पत्नी के समान करें।

श्लोक-37. भवन्ति चात्र श्लोकाः- कृच्छाधिगतवित्तांश्च राजवल्लभनिष्ठुरान्। आयत्यां च तदात्वे च दूरादेव विवर्जयेत्।।37।।

अर्थःइस विषय में प्राचीन श्लोक हैं- जिसको बड़ी कठिनाई से धन प्राप्त हो, जो राजा को खुश रखने के लिए क्रूर करते हों, उनसे वर्तमान में अथवा भविष्य में कितना भी धन प्राप्त होने की होने की आशा हो। तब भी वेश्या को ऐसे लोगों से दूर रखना चाहिए।

श्लोक-38. अनर्थो वर्जने येषां गमनेऽभ्युदयस्तथा। प्रयत्नोनापि तान् गृह्य सापदेशमुपक्रमेत्।।38।।

अर्थःजिनको त्याग देने से दूसरे अनर्थ की संभावना होते हुए भी अपने अभ्युदय का उम्मीद हो तो ऐसे प्रेमियों से प्रयत्नपूर्वक सेक्स करना चाहिए।

श्लोक-39. प्रसन्ना ये प्रयच्छन्ति स्वल्पेऽपगणितं वसु। स्थूललक्षान्महोत्साहांस्तान्गच्छेत्स्वैरपि व्ययैः।।39।।

अर्थःजो थोड़ी सी खुशी प्राप्त हो जाने पर अपना पूरा धन देने को तैयार रहते हैं। वेश्या को इस प्रकार के पुरुषों को अपना धन खर्च करके मिलाना चाहिए।

इस प्रकरण के अंतर्गत वेश्याओं के उस विशेष धनलाभ की चर्चा की गई है जिसे वे अनेक उपायों से प्रेमियों को फंसाकर प्राप्त करती हैं। शुरू में तीन प्रकार की वेश्याओं का उल्लेख किया गया है- 1. एकपरिग्रह 2. अनेकपरिग्रह 3. अपरिग्रह। जो स्त्री एकचारिणी बनकर एक ही प्रेमी के पास रहने लगती है। वह एक परिग्रह, जो अनेक प्रेमियों से सेक्स करके धन की प्राप्ति करती है। वह अनेकपरिग्रह, और जो किसी से सम्बद्ध न होकर जो भी आता है, उसी से सेक्स करके धन प्राप्त करती है वह अपरिग्रह वेश्या कहलाती है।

कामशास्त्र के अंतर्गत वेश्याओं का शासन पर कोई भी नियंत्रण प्रतीत नहीं होता। वैशिक अधिकरण में प्रेमियों, वेश्यागामियों को हर प्रकार से ठगने उन्हें मुड़ने की तथा निःसत्व हो जाने पर धक्का देकर निकाल देने की, अपराध लांछन लगाकर उनकी सामाजिक बदनामी फैलाने की पूरी छूट थी। राजा तथा अन्य राजपुरूष भी कुछ विशेष वेश्याओं की हिमायत किया करते थे। किसी व्यक्ति से उचित धन प्राप्त न होने पर अदालत में दावा करके प्राप्त कर लेती थी। कौटिल्य अर्थशास्त्र के गणिकाध्यक्ष प्रकरण तथा कामसूत्र के वैशिक अधिकरण का तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ विद्वानों की यह मान्यता खत्म हो जाती है कि कौटिल्य तथा वात्स्यायन एक ही थे। यह बात सही है कि दोनों शास्त्रों की रचना पद्धति में साम्य है, लेकिन एक ही समय में एक ही आचार्य द्वारा लिखे गये ग्रंथों में नियम तथा विधान तथा सामाजिक तथा राजनीतिक परंपराओं में इतना वैषम्य कथापि नहीं हो सकता है।

आचार्य कौटिल्य के समान ही कामसूत्रकारों ने भी उत्तम, मध्यम तथा अधर्म तीन प्रकार की वेश्याओं मानी है। लेकिन सिद्धांत तथा उद्देश्य अलग हैं। कौटिल्य के भेद राजाओं की परिचर्या के लिए हैं। उनकी योग्यता के अनुसार उन्हें अधिक और कम वेतन दिये जाने के हैं। लेकिन कामसूत्र के भेद अर्थोपार्जन तथा प्रेमियों के साथ व्यवहार पर आधारित है।

आचार्य वात्स्यायन ने अनेक तरह की वेश्याओं का समुच्चय कर गणिका, रूपाजीवा तथा कुम्भदासी- ये तीन प्रकार की वेश्याएं निर्धारित की हैं। उन्होंने गणिका को उत्तमा, रूपाजीवा को मध्यमा तथा कुंभदासी को अधमा माना है।

कामसूत्रकार ने यहां पर "समानप्रसवा जाति" सिद्धांत को स्वीकार कर वेश्या को स्त्री जाति के अंतर्गत मानकर अपनी सदाशयता का परिचय दिया है। वेश्या नारी का एक विकृत रूप है या नारी वर्ग का विकृत रूप वेश्या वर्ग है।

ऐसा कहा जाता है कि जिस प्रकार मनुष्य से उच्च देवता व मनुष्य से निम्न यक्ष, गंधर्व योनियां होती हैं, उसी तरह मानवी स्त्री से उच्च अप्सरा भी स्त्री हो सकती है, लेकिन गणिका

वेश्या को स्त्री योनि (जाति) से अलग एक योनि मान लेना तर्क, बुद्धि तथा मानव विज्ञान के खिलाफ है। ऐसा महसूस होता है कि जिस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र इन चार मुख्य वर्णों के अंतर्गत अनेक वर्ण माने जाने लगे हैं। उसी प्रकार नारी जाति के अंतर्गत वेश्याओं को भी जन्मना जाति स्वीकार किया गया है। लेकिन इसे सैधांतिक न मानकर व्यवहारिक माना जाता है।

इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे वैशिके षष्ठेऽधिकरणे लाभविशेषः पश्चमोऽध्यायः।।

भाग 6 वैशिकं

Free Hindi PDF Books

अध्याय 6 अर्थादिविचार प्रकरण

श्लोक-1. अर्थानाचर्यमाणाननर्था अप्यनद्भवन्त्यनुबंधाः संशयाश्च।।1।।

अर्थः धनोपार्जन के लिए कोशिश करती हुई वेश्याओं को कई प्रकार के अनर्थ अनुभव और संशयों का सामना करना पड़ता है।

श्लोक-2. ते बुद्धिदौर्बल्यादतिरागादत्यभिमानादतिदम्भादत्यार्जवा-दतिविश्वासादति-क्रोधात्प्रमादात्साहमाद्दैवयोगाश्च स्युः।।2।।

अर्थः वे अनर्थ उनके अनुबंध तथा संशय, बेवकूफी से अधिक प्रेम करने से, अधिक गर्व करने से, निहायत आसानी से, अधिक यकीन करने से, अधिक गुस्सा करने से, प्रमाद से, बिना सोचे-समझे काम करने से तथा देवयोग से वेश्याओं पर टूट पड़ते हैं।

श्लोक-3. तेषां फलं कृतस्य व्ययस्य निष्फलत्वमनायतिरागमिष्यतोऽर्थस्य निवर्तन माप्तस्य निष्क्रमणं पारुष्यस्य प्राप्तिर्गम्यता शरीरस्य प्रघातः केशानां छेदनं पातनमंगवैकल्यापत्तिः।।3।।

अर्थः इनके बुरे परिणाम ये निकलते हैं- चिकित्सा आदि में खर्च किया धन बेकार हो जाता है। नायक पर प्रभाव भी नहीं रह जाता है। तो धन प्राप्त होता है वह भी नहीं मिलता तथा संक्षिप्त धन भी निकल जाता है। अक्सर आपस में कलह के कारण मृत्यु भी हो जाती है। या गुस्से में आया हुआ प्रेमी बालों को पकड़कर वेश्या को नीचे गिराकर मारता है और हाथ-पैरों को तोड़ देता है।

श्लोक-4. तस्मात्तानादित एव परिजिहीर्षेदर्थभूयिष्ठांश्चोपेक्षेत्।।4।।

अर्थः इस कारण से वेश्या को चाहिए कि आरम्भ से ही बेवकूफी आदि को दूर करने की कोशिश करें।

श्लोक-5. अर्थो धर्मः काम इत्यर्थत्रिवर्गः।।5।।

अर्थः अर्थ, धर्म तथा काम यह अर्थ त्रिवर्ग है।

श्लोक-6. अनर्थोऽधर्मो द्वेष इत्यनर्थत्रिवर्णः।।6।।

अर्थः अनर्थ, अधर्म तथा ईर्ष्या- यह अनर्थ त्रिवर्ग है।

श्लोक-7. तेष्वाचर्यमाणेष्वन्यस्यापि निष्पत्तिरनुबंधः।।7।।

अर्थः अर्थ आदि छहो को सिद्ध हो जाने पर उसके साथ दूसरा भी स्वतः साबित हो जाता है वह अनुबंध है।

श्लोक-8. संदिग्धायां तु फलप्राप्तौ स्याद्वा न वेति शुद्धसंशयः।।8।।

अर्थः यह होगा या नहीं इस तरह के फल नें संदेह होना शुद्ध संशय है।

श्लोक-9. इर्द वा स्यादिदं वेति संकीर्णः।।9।।

अर्थः यह फल होगा या वह फल होगा- यह संकीर्ण संदेह है।

श्लोक-10. एकस्मिन् क्रियमाणे कार्ये कार्यद्वयस्योत्पत्तिरुभयतोयोगः।।10।।

अर्थः यह कार्य करते हुए दूसरे कार्य की उत्पत्ति हो जाए तो वह उभय योग कहलाता है।

श्लोक-11. समन्तादुत्पत्तिः समन्ततोयोग इति तानदाहरिष्यामिः।।11।।

अर्थः चारों ओर से उत्पत्ति हो तो यह समन्वत योग है। इन सभी के उदाहरण आगे दिये जाएंगे।

श्लोक-12. विचारितरूपोऽर्थत्रिवर्णः। तद्विपरीत एवानर्थत्रिवर्गः।।12।।

अर्थः जिसके स्वरूप का विचार किया जा चुका है वह अर्थ त्रिवर्ग है, उसी के विपरीत अनर्थ त्रिवर्ग है।

श्लोक-13. यस्योत्तमस्याभिगमने प्रत्यक्षतोऽर्थलाभो ग्रहणीयत्वमायतिरागमः प्रार्थनीयत्वं चान्येषां स्यात्सोऽर्थोऽर्थानुबंधः।।13।।

अर्थः प्रेमी के सभी गुणों से युक्त उत्तम नायक के साथ सेक्स करने से वेश्या को शीघ्र ही उससे धन की प्राप्ति होती है। इस कारण से वह वेश्या दूसरों के लिए आकर्षक चीज बन जाती है। इससे उसका प्रभाव बढ़ जाता है। उससे सेक्स करने के लिए लोग प्रार्थना करते हैं। इस तरह का अर्थ दूसरे तरह के अर्थों से संबंधित होने से अर्थानुबंध होता है।

श्लोक-14. लाभमात्रे कस्यचिदन्यस्य गमनं सोऽर्थो निरनुबंधः14।।

अर्थः लाभ की दृष्टि से किसी भी सेक्स करना अनुबंध रहित अर्थात् निरनुबन्ध है।

श्लोक-15. अन्यार्थपरिग्रहे सत्त्कादायतिच्छेदनमर्थस्य निष्क्रमणं लोकविद्विष्टस्य वा नीचस्य गमनमायतिघ्न मर्थोऽनर्थानुबंधः।।15।।

अर्थः जो निर्धन प्रेमी दूसरे का धन अपहरण करके वेश्या को दे देता है। तो ऐसा धन लेने से वेश्या का प्रभाव घटता है तथा वह धन निकल भी जाता है। अथवा लोकद्रोही या नीच के साथ सेक्स करने से भी प्रभाव घट जाता है। ऐसा अर्थ-अनर्थ उत्पन्न करता है। इसीलिए इसे अर्थोऽनर्थानुबंध कहते हैं।

श्लोक-16. स्वेन व्ययेन शूरस्य महामात्रस्य प्रभवतो वा लुब्धस्य गमनं निष्फलमपि ।।16।।

अर्थः किसी शूर-वीर अथवा प्रभावशाली, लोभी या राजमंत्री के लिए स्वयं खर्च करने पर भी प्रयोजन सिद्ध न हो तो तब भी मौके पर संकटों, अनर्थों के प्रतिकार के लिए और लोगों में प्रभाव जमाने के लिए वह मिलना लाभदायक होता है। एक प्रयोजन के न सिद्ध होने पर भी दूसरा प्रयोजन तो सिद्ध हो ही जाता है।

श्लोक-17. कदर्यस्य सुभगमानिनः कृतघ्नस्य वातिसंधानशीलस्य स्वैरपि व्ययैस्तथाराधनमंते निष्फलं सोऽनर्थो निरनुबंधः।।17।।

अर्थः स्वयं को खूबसूरत समझने वाले दुराचारी, कृतघ्न प्रेमी से जब वेश्या अपना धन खर्च कर काफी खुशामद करके सेक्स कराती है तो उसका धन तथा अनुराग निष्फल हो जाता है। ऐसा धन अनर्थोनिरनुबंध होता है।

श्लोक-18. तस्यैव राजवल्लभस्य क्रौर्यप्रभावाधिकस्य तथैवाराधनमंते निष्फलं निष्कासनं च दोषकरं सोऽनर्थानुबंधः।।18।।

अर्थः उसी प्रकार क्रूर राजपुरूष अथवा राज्याधिकारी के साथ सेक्स करना भी निष्फल होता है तथा उसे निकाल देना भी काफी बड़ी गलती है। इसलिए दूसरे अनर्थों को साथ लिए यह अनर्थोऽनुबंध है।

श्लोक-19. एवं धर्मकामयोस्प्युनबंधान्योजयेत्।।19।।

अर्थः इस तरह धर्म तथा काम के अनुबंधों की योजना बना लेनी चाहिए।

श्लोक-20. परस्परेण च युक्तया संकिरेदेत्यनुबंधाः।।20।।

अर्थः इन्हें आपस में युक्तिपूर्वक मिलना चाहिए। ये अनुबंध पूरे होते हैं।

श्लोक-21. परितोषितोऽपि दास्यति न वेत्यर्थसंशयः।।21।।

अर्थः राजी हो जाने के बाद भी देगा अथवा नहीं, इस तरह के संदेश को अर्थसंशय के नाम से जाना जाता है।

श्लोक-22. निष्पीडितार्थमफलमुत्सृजन्त्या अर्थमलभमानाया धर्मः स्यात्र वेति धर्मसंशयः।।22।।

अर्थः वेश्या ने जिस प्रेमी को अपने जाल में फंसाकर सारा धन ले लिया हो और उससे धन न मिलने से उसे त्याग देने को उद्यत हो तो उसका इस प्रकार त्याग करना वेश्या का धर्म होगा अथवा नहीं।

श्लोक-23. अभिप्रेतमुपलभ्य परिचारकमन्यं वा क्षुद्रं गत्वा कामः स्यात्र वेति कामसंशयः।।23।।

अर्थः इच्छित प्रेमी को पाकर वेश्या जब आत्मीय सेवक अथवा किसी निम्न व्यक्ति के पास जाकर यह शक करती है कि काम होगा अथवा नहीं, वेश्या का यही सोचना काम-संशय है।

श्लोक-24. प्रभावान् क्षुद्रोऽनभिगतोऽनर्थं करिष्यति न वेत्यनर्थसंशयः।।24।।

अर्थः प्रभावशाली नीच-संभोग न होने पर अनर्थ करेगा अथवा नहीं। यह अनर्थसंशय है।

श्लोक-25. अत्यंतनिष्फलः सक्तः परित्यक्तः पितृलोकं यातात्तत्राधर्मः स्यात्र वेत्यधर्मसंशयः।।25।।

अर्थः सेक्स करने के लिए इच्छुक धनहीन प्रेमी को सारहीन समझकर छोड़ देना चाहिए। फिर यह न सोचना कि कभी वह वियोगी मर जाएगा तो अधर्म होगा। अथवा नहीं- इस प्रकार सोचना अधर्मसंशय है।

श्लोक-26. रागस्यापि विवक्षायामभिप्रेतमनुपलभ्य विरागः स्यात्र वेति द्वेषसंशयः। इति शुद्धसंशयाः।।26।।

अर्थः सेक्स क्रिया से दुःखी वेश्या अपने मनचाहे प्रेमी को न पाकर अपनी काम-व्यथा की शक्ति के लिए जब तड़पती है तो उस समय उसे विरोग होना अथवा नहीं यही द्वेष का संशय है। शुद्ध संशय समाप्त होते हैं।

श्लोक-27. अर्थ संकीर्णः।।27।।

अर्थः इसके अंतर्गत संकीर्ण संशय कहते जाते हैं।

Free Hindi PDF Books

श्लोक-28. आगंतोरविदितशलस्य वल्लभसंश्रयस्य प्रभविष्णोर्वा समुपरिस्थितस्याराधनमर्थोऽनर्थ इति संशयः।।28।।

अर्थः आश्रित प्रेमी अथवा प्रभावशाली प्रेमी की उपस्थिति में यदि अपरिचित व्यक्ति मिलने के लिए आता है तो वेश्या के सामने संशय की स्थिति होती है कि वह उस व्यक्ति से सेक्स करे अथवा न करे।

श्लोक-29. श्रोत्रियस्य ब्रह्मचारिणो दीक्षितस्य व्रतिनो लिंगिनो वा मां दृष्टा जातारागस्य मुमूर्षोर्मित्रवाक्यादाननृशंस्याश्च गमनं धर्मोऽधर्म इति संशयः।।29।।

अर्थः प्रेमिका को देखकर श्रेयित्र, ब्रह्मचारी, दीक्षित, व्रती, साधु-संयासी अथवा मरने की इच्छा रखने वाले लोगों के साथ दोस्तों के कहने पर अथवा अपनी दयालुता के कारण से सेक्स करना धर्म होगा अथवा अधर्म- यह संदेह धर्माधर्म संकीर्ण है।

श्लोक-30. लोकादेवाकृतप्रत्ययादगुणो गुणवान्वेत्यनवेक्ष्य गमनं कामोद्वेष इति संशयः।।30।।

अर्थः प्रेमी के गुण, अवगुण पर खुद कोई विचार न करके सिर्फ लोगों से सुनकर कि यह गुणवान है- प्रेमिका उससे जब संभोग करती है तो उसे शक उत्पन्न होता है कि इस तरह का समागम कार्य होगा अथवा द्वेष- इस शक को कामद्वेष संकीर्ण संशय कहते हैं।

श्लोक-31. संकिरेच्च परस्परेणेति संकीर्णसंशयाः।।31।।

अर्थः जो आपस में मिलते समय संशय हो वह संकीर्ण है। संकीर्ण संशय पूरे होते हैं।

श्लोक-32. यत्र परस्याभिगमनेऽर्थः सक्ताच्च संघर्षतः उभयतोऽर्थः।।32।।

अर्थः किसी दूसरे प्रेमी के साथ धन लेकर सेक्स करने से वेश्या पर आकर्षित प्रेमी भी दूसरे नायक का संबंध विच्छेद करने के लिए धन दे देता है तो दोनों ओर से धन का योग होने से यह उभयतोऽर्थयोग कहलाता है।

श्लोक-33. यत्र स्वेन व्ययेन निष्फलमभिगमनं सक्ताच्चमर्षिताद्वित्तप्रत्यादानं स उभयतोऽनर्थः।।33।।

अर्थः अपना धन खर्च करके भी वेश्या जिस प्रेमी से सेक्स करती है तथा उसे कुछ भी नहीं मिलता है और रुष्ट प्रेमी से उसके दिये गये धन के छिन जाने का डर भी बना रहता है तो उसे उभयतोऽनर्थ कहते हैं।

श्लोक-34. यत्राभिगमनेऽर्थो भविष्यति न वेत्याशंका सक्तोऽपि संघर्षाद्दास्यति न वेति स उभयतोऽर्थसंशयः।।34।।

अर्थः जिसके साथ सेक्स करने से वेश्या को धन की प्राप्ति होती है या नहीं यह संदेह हो, धनहीन आसक्त संघर्ष में पड़कर धन देगा अथवा नहीं- दोनों ओर से ऐसा शक होने पर उभयोतोर्थसंशय होता है।

श्लोक-35. यत्र परस्याभिगमनेऽर्थः सक्ताच्च संघर्षतः उभयतोऽर्थः।।35।।

अर्थः किसी दूसरे प्रेमी के साथ धन लेकर सेक्स करने से वेश्या पर मोहित प्रेमी भी दूसरे नायक का संबंध विच्छेद करने के लिए धन देता है तो दोनों ओर से धन का योग होने से यह उभ्यतोऽर्थ कहलाता है।

श्लोक-36. बाभ्रवीयास्तु।।36।।

अर्थः और बाभ्रवीयास्तु सम्प्रदाय के आचार्य तो इन संशयों को जिस प्रकार का कहते हैं। वैसा सुनते भी हैं।

श्लोक-37. यत्राभिगमनेऽर्थोनभिगमने च सक्तादर्थः स उभयतोऽर्थः।।37।।

अर्थः जिस उभयतोयोग में वेश्या अपने पहले के प्रेमी से बिना सेक्स किये ही दूसरे के साथ सेक्स करके धन प्राप्त कर ले तथा बाद में पुराने प्रेमी को खुश करके उससे भी धन प्राप्त कर ले तो यह उभयतोऽर्थ कहलाता है।

श्लोक-38. यत्राभिगमने निष्फलो व्ययोऽनभिगमने च निष्प्रतीकारोऽनर्थः।।38।।

अर्थः जिस सेक्स में बेकार ही खर्च हो और सेक्स न करने से अनिवार्य संकट उपस्थित होने का डर हो और सेक्स करने पर पुराना प्रेमी गुस्से में आकर कुछ अनर्थ कर बैठे तो यह उभयतोऽनर्थ होता है।

श्लोक-39. यत्राभिगमने निर्व्ययो दास्यति न वेति संशयोऽनभिगमने सक्तो दास्यति वेति स उभयतोऽर्थसंशयः।।39।।

अर्थः जिसके सेक्स से कुछ अपना खर्च नहीं लेकिम वह कुछ देगा या नहीं देगा। यह संशय बना हो और अपना आसक्त प्रेमी भी बिना मिले देगा अथवा नहीं, यह भी संदेह हो तो यह उभयतोऽर्थ संदेह है।

श्लोक-40. यत्राभिगमने व्ययवति पूर्वो विरुद्धः प्रभाववान् प्राप्स्यते न वेतिसंशयोऽनभिगमने च क्रोधादनर्थ करिष्यति न वेति स उभयतोऽनर्थ संशयः।।40।।

अर्थः अपना धन खर्च कर देने पर भी जिससे सेक्स करने में यह संदेह हो कि पहला प्रेमी जो प्रभावशाली है इसके साथ सेक्स करने पर गुस्से में आकर कहीं मिलना बंद न कर दे और न मिलने पर यह गुस्से से कुछ अनर्थ करेगा अथवा नहीं इस प्रकार का संदेह उभयतोऽनर्थ संशय है।

श्लोक-41. एतेषामेव व्यतिकरेऽन्तोर्थोऽन्यतोऽनर्थः, अन्यतोऽर्थोऽन्योतोऽर्थसंशयः अन्यतोऽर्थोऽन्यतोऽनर्थसंशयः इति षट्सकीर्णयोगाः।।41।।

अर्थः संयोग से इन्हीं के बारे में एक-एक के 6 संकीर्ण योग बनते हैं। एक से अर्थ एक से अनर्थ, एक से अर्थ एक से अर्थसंशय और एक से अर्थ एक से अनर्थ संशय- ये तीन श्वेतकेतु के मत से और तीन ही बाभ्रवीय मत से दोनों मिलाकर 6 हो जाते हैं। षटंसंकीर्ण योग समाप्त होता है।

श्लोक-42. तेषु सहायैः सह विमृश्य यतोऽर्थभूयिष्ठोऽर्थसंशयो गुरुरनर्थप्रशमो वा ततः प्रवर्तेत।।42।।

अर्थः इनमें से इनके सहायताकारों के साथ विचार करके इससे अधिक अर्थ वाला संशय हो या जिसमें महान अनर्थ की शक्ति हो, उसी के साथ प्रवृत्त होना चाहिए।

श्लोक-43. एवं धर्मकामावप्यनयैव यक्तयोदाहरेत्। संकिरेच्च परस्परेण व्यतिषञ्जयेच्चेत्युभयतोयोगाः।।43।।

अर्थः अर्थ शुद्ध उभयतोयोग के ढंग पर ही धर्म तथा काम के लिए शुद्ध उभयतोयोग बना लेना चाहिए। जिस प्रकार अर्थ के संकीर्ण योग हैं। उसी तरह परस्पर संकीर्ण योग बना लिया जाए तो तथा फिर उनके विरोधी भाव हटाकर आपस में संश्लिष्ट कर दें।

श्लोक-44. संभूय च विटाः परिगृहणन्त्येकामसौ गोष्ठीपरिग्रहः।।44।।

अर्थः किसी एक वेश्या के साथ जब एक से अधिक विट मिलकर सेक्स करते हैं तो उसे गोष्ठी परिग्रह कहते हैं।

श्लोक-45. सा तेषामितस्यतः संसृज्यमाना प्रत्येकं संघर्षदर्थं निर्वर्तयेत्।।45।।

अर्थः गोष्ठी परिग्रह करने वाली वेश्या इधर-उधर मिलकर अपने मिलने-जुलने वालों से संघर्ष कराकर उनसे धन प्राप्त कर ले।

श्लोक-46. सुवसंतकादिषु च योगे यो मे इमममुं च संपादयिष्यति तस्याद्य गमिष्यति मे दुहितेति मात्रा वाचयेत्।।46।।

अर्थः वेश्या की मां उसके प्रेमियों के पास संदेश भेज दे कि सुवसंतक, कौमुदी महोत्सव, महन महोत्सव आदि निकट आने वाले उत्सव में मेरी पुत्री उसी के साथ सेक्स करेगी, जो इन चीजों को सबसे पहले उसे देगा।

श्लोक-47. तेषां च संघर्षजेऽभिगमने कार्याणि लक्षयेत्।।47।।

अर्थः उस मौके पर वहां जब प्रेमी लोग प्रेमिका से मिलने के लिए आपस में संघर्ष करने लगें उस समय वह अपना लक्ष्य अधिक लाभ पर ही रखे।

श्लोक-48. एकतोऽर्थः सर्वतोऽर्थः एकतोऽनर्थः। अर्धतोऽर्थः सर्वतोऽर्थः अर्धतोऽनर्थः सर्वतोऽनर्थ। इति समन्ततो योगाः।।48।।

अर्थः एक से अर्थ सबसे अर्थ, एक से अनर्थ सबसे अनर्थ, आधे से अर्थ पूरे से अर्थ, आधे से अनर्थ- चारों तरह के योग हैं।

श्लोक-49. अर्थसंशयमनर्थसंशयं च पूर्ववद्योजयेत्। संकिरेच्च तथा धर्मकामावपि। इत्यर्थानर्थानुबंधसंशयविचाराः।।49।।

अर्थः सबसे पहले अर्थ संशय तथा अनर्थ संशय की योजना बनानी चाहिए। इसके साथ ही संकीर्ण को भी जान लेना चाहिए। इसी तरह धर्म तथा काम के समन्तोयोग समझने चाहिए।

श्लोक-50. कुम्भदासी परिचारिका कुल्टा स्वैरिणी नटी शिल्पकारिका प्रकाशविनष्टा रूपाजीवा गणिका चेति वेश्याविशेषः।।50

अर्थः वेश्याएं कुम्भदासी, परिचारिका, कुल्टा, स्वैरिणी, नटी, शिल्पकारिका, प्रकाश, विनष्टा, रूपाजीवा तथा गणिका आदि प्रकार की होती हैं।

श्लोक-51. सर्वासां चानुरूपेण गम्याः सहायास्तुदुपरञ्जनमर्थागमोपाया निष्कासनं पुनः संधानं लाभविशेषानुबंधा अर्थानर्थानुबंधसंशयविचाराश्चेति वैशिकम्।।51।।

अर्थः उपर्युक्त सूत्र में जितनी प्रकार की वेश्याओं के बारे में बताया गया है उतने ही प्रकार के उनसे सेक्स करने के लिए आने वाले भी होते हैं। इस वैशिक अधिकरण में वेश्याएं, वेश्याओं के प्रेमी, उनके सहायक अनुरक्त करने के उपाय, धन खींचने के उपाय, प्रेमी को निकालने का तरीका तथा निकालकर फिर मिलाने का तरीका, लाभ विशेष अर्थ, अनर्थ, अनुबंध तथा संशय विचार मुख्यतया इन्हीं के बारे में वर्णन किया गया है।

श्लोक-52. भवतश्चात्र श्लोकौ- रत्यर्थाः पुरूषा येन रत्यर्थाश्चैव योषितः। शास्त्रस्यार्थप्रधानत्वात्तेन योगोऽत्र योषिताम्।।52।।

अर्थः इसके संबंध में दो श्लोक हैं-

स्त्री तथा पुरुषों के मिलन का प्रमुख उद्देश्य सेक्स सुख की प्राप्ति होता है। स्त्री तथा पुरुषों के सेक्स सुख का उद्देश्य ही इस शास्त्र का प्रतिपाद्य विषय है, इसलिए वैशिक अधिकरण में स्त्रियों के रतिप्रयोजन पर विस्तार से विचार किया गया है।श्लोक-53 संति रागपरा नार्यः संति चार्थपरा अपि। प्राक्तत्र वर्णितो रागो वेश्यायोगाश्च वैशिके।।53।।

अर्थः अनेक औरतें विशुद्ध अनुरागिणी होती हैं, बहुत सी औरतें सेक्स के साथ धन की भी इच्छा रखती हैं। विशुद्ध अनुरागिणी स्त्रियों का वर्णन प्रारम्भ में ही किया जा चुका है और जो औरते रति राग के साथ अर्थ की भी कामना करती हैं। उनका उल्लेख इस प्रकरण में किया जा रहा है।

स्त्री हो या पुरूष, सती हो या वेश्या, गृहस्थ हो या विरक्त, संवेग के कारण सभी की क्रियाएं परिवर्तित होती हैं। एक ही स्थिति पर हमेशा रहने से सुंदरता नष्ट होने लगती है। इस प्रकार यह तय है कि एक विषय से उत्पन्न संवेग में परिवर्तन अवश्य ही होते हैं। विष्णुपुराण के अंतर्गत एक ही विषय पर दो भाव या संवेग एक साथ ही उत्पन्न हो सकते हैं क्योंकि जब एक ही वस्तु से दुःख, सुख, ईर्ष्या आदि उत्पन्न होते हैं तब वह वस्तु दुख देती है। यही एक समय प्रेम को उत्पन्न करता है, दुख, क्रोध तथा प्रसन्नता को उत्पन्न करता है।

ठीक यह प्रवृत्ति, यही वेश्याओं तथा उनके प्रेमियों की भी होती है। जिसे कामसूत्र से व्यवहारिक मनोवैज्ञानिक आधार पर समझाया गया है। वेश्याओं की सुंदरता पर अपनी जान देने को तैयार रहने वाले प्रेमी उससे अपमानित होकर, उसकी ठोकरें खाकर, उससे लुट जाने पर भी पीछा नहीं छोड़ते। उन्हें अपने प्रेमिका की जुदाई पल भर के लिए भी बर्दाश्त नहीं होती है। धर्मशास्त्र भी इसका समर्थन करता है।

शास्त्रकार ने अधिकरण समाप्त करते हुए वेश्याओं के विभिन्न प्रकार बतायें हैं- कुम्भदासी,

Free Hindi PDF Books

परिचारिका, कुल्टा, स्वैरिणी, नटी, शिल्पकारिका, प्रकाशविनष्टा, रूपाजीवा, गणिका आदि। प्रसिद्ध टीकाकार यशोधर ने अपनी जयमंगला टीका में इनके लक्षणों को बताते हुए लिखा है कि निकृष्ट कार्य करने वाली स्त्री कुम्भदासी, जो अपने स्वामी की सेवा करती है, ऐसी सेविका, परिचारिका, वेश्या जो पति के डर से दूसरों के घर में जा करके व्यभिचार कराती है, अपने पति का अनादर करके जो अपने घर पर ही अथवा कहीं अन्य जगह पर व्यभिचार करती है। वे स्वैरिणी वेश्या कहलाती हैं।

सार्वजनिक समारोहों में नाचने वाली, वेश्या, धोबी अथवा दर्जी की पत्नी शिल्पकारिका वेश्या, जो पति के जिंदा रहने पर या मर जाने पर किसी दूसरे के साथ शादी कर लेती है। प्रकाश विनष्टा, परिचारिका, वेश्या से लेकर प्रकाश विनष्टा तक की स्त्रियां रूपाजीवा वेश्या कहलाती हैं।

इस अधिकरण के छठे अध्याय में वात्स्यायन ने वेश्या के अर्थ-अनर्थ तथा संशय संबंधी आपत्तियां और उनके प्रतिकार के जो उपाय बताये हैं। वह विशुद्ध राजनीति के हैं। आचार्य कौटिल्य ने कौटलीय अर्थशास्त्र के नवें अधिकरण के सातवें अध्याय में राजा के लिए यहीं उपाय बतायें हैं। शत्रु की वृद्धि के विषय में कौटिल्य ने राजा के लिए 1. आपदर्श, 2. अनर्थ, तथा 3. संशय जो तीन बातें बताई गयी हैं वही वात्स्यायन दुश्मन के पैदा होने पर भी वेश्या के लिए बताते हैं।

इति श्रीवात्स्यायनीये कामसूत्रे वैशिके षष्ठेऽधिकरणे अर्थानर्थानुबंधसंशयविचारा वेश्याविशेषाश्च षष्ठोऽध्यायः. समाप्तं चाधिकरणम्।

Free Hindi PDF Books